वर्ष 23, अंक 361, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 21 जनवरी 2025 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कोलकाता के 'राक्षस' को उम्रकैद

कोर्ट में खुद को बताया बेगुनाह

पश्चिम बंगालः पश्चिम बंगाल की सियालदह अदालत ने आरजी कर बलात्कार-हत्या मामले में दोषी संजय रॉय को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है. साथ में अदालत ने 50,000 रुपये का जुमार्ना भी लगाया है. पीड़िता के पिता ने दोषी के लिए अधिकतम सजा की मांग की थी.

न्यायाधीश ने 18 जनवरी को पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि इस मामले में अधिकतम सजा ह्लमृत्युदंडह्व हो सकती है, जबकि न्यूनतम सजा आजीवन कारावास हो सकती है. बलात्कार और हत्या के अपराध के मामले में रॉय के खिलाफ सजा की प्रक्रिया सोमवार को पूरी हो गई, लेकिन सबूतों से छेड़छाड़ और बदलाव के संबंध में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की जांच चलती रहेगी.

सीबीआई के वकील ने दी ये दलील

सुनवाई के दौरान सीबीआई के वकील ने कहा कि हमने सबूत पेश किए हैं. हमेने कानून के हिसाब से काम किया है. उन्होंने आगे कहा, "पीड़िता 36 घंटे ड्यूटी पर थी, कार्यस्थल पर उसके साथ रेप और मर्डर हुआ था. वो एक मेधावी छात्रा थी. पीड़िता के पारिवारिक वकील ने कहा, "साक्ष्यों से उस रात की घटना के बारे में सारी बातें साफ होती है. कई बार बहस के बाद भी आरोपी की बेगुनाही साबित नहीं हुई है.

सेमिनार हॉल से बरामद किया गया था शव

बता दें कि ट्रेनी महिला डॉक्टर का शव पिछले साल 9 अगस्त को सुबह आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के परिसर के सेमिनार हॉल से बरामद किया गया था. मामले की शुरूआती जांच कोलकाता पुलिस की एक विशेष जांच टीम ने की थी, जिसने रॉय को गिरफ्तार किया था.

हालांकि, सीबीआई ने अपराध की तारीख के पांच दिन बाद जांच शुरू की और उसके बाद रॉय को शहर की पुलिस ने केंद्रीय एजेंसी के अधिकारियों को सौंप दिया. इस मामले में सुनवाई की प्रक्रिया पिछले साल 11 नवंबर को शुरू हुई थी. मामले में मुकदमा शुरू होने के 59 दिन बाद फैसला सुनाया हुआ. अपराध की तारीख से 162 दिनों के बाद दोषसिद्धि की प्रक्रिया पूरी हुई।

सीएम ममता बनर्जी ने कही ये बात

फैसले से पहले पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने कहा था, "हमने जांच में सहयोग किया है. हमने न्याय की मांग की थी लेकिन न्यायपालिका को अपना काम करना था इसलिए इसमें इतना समय लगा, लेकिन हम हमेशा चाहते थे कि पीड़िता को न्याय मिले.

कांग्रेस पार्टी दिल्ली की जनता के लिए बेहतर विकल्प : सचिन पायलट

उदयपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की जीत का दावा किया है। राजस्थान के उदयपुर में मीडिया से बातचीत में पायलट ने इसकी वजह भी बताई। बोले, ऐसा इसलिए क्योंकि विकास के नाम पर 'आप' ने कुछ नहीं किया। टोंक विधायक सचिन पायलट ने कहा, "दिल्ली में विधानसभा चुनाव चल रहा है। दिल्ली की जनता ने आम आदमी पार्टी को कई बार मौका दिया लेकिन विकास के नाम पर कुछ नहीं हुआ। पिछले 12 साल में दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार के बीच जो वर्चस्व की जो लड़ाई है, उसमें दिल्ली की जनता पिस रही है। ऐसे में कांग्रेस पार्टी दिल्ली की जनता के लिए बेहतर विकल्प हो सकती है।"पायलट ने दावा किया कि उनकी पार्टी अपने वादे को पूरा करेगी। बोले, "शीला दीक्षित के कार्यकाल को जनता याद कर रही है। हम लोगों ने जनता को कुछ गारंटी दी है, जिसे हम पूरा करेंगे। हम जनता और मुद्दों की बात कर रहे है। हम मजबूती से लड़ेंगे और कांग्रेस पार्टी का दिल्ली के अंदर अच्छा परफॉर्मेंस रहेगा।"

ट्रायल कोर्ट की कार्यवाही पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई अंतरिम रोक

राहुल गांधी को मानहानि मामले में राहत

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को मानहानि मामले में सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई है, सुप्रीम कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट की कार्यवाही पर अगले आदेश तक अंतरिम रोक लगा दी है। ये मामला 2018 से जुड़ा हुआ है।

मानहानि मामले में राहुल को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई है। शीर्ष अदालत ने ट्रायल कोर्ट की कार्यवाही पर अगले आदेश तक अंतरिम रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड की चाईबासा की एमपी-एमएलए कोर्ट की कार्रवाई पर रोक लगाई है। वहीं झारखंड सरकार और याचिकाकर्ता का नोटिस दिया गया है। इसमें जवाब दाखिल करने के लिए चार हफ्ते का वक्त दिया गया है।

बता दें कि ये मामला केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बारे में राहुल गांधी द्वारा वर्ष 2018 में कथित टिप्पणी से जुड़ा हुआ है। इसी मामले में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है।

जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने झारखंड सरकार और शिकायतकर्ता से राहुल गांधी द्वारा दायर याचिका पर जवाब मांगा है।

राहुल गांधी ने इस मामले को रद्द करने की मांग की थी। जिस पर सोमवार 20 जनवरी को सुनवाई के दौरान राहुल गांधी की ओर से पेश सीनियर वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने इस बात पर जोर डाला कि शिकायत किसी तीसरे पक्ष द्वारा दायर की गई थी और मानहानि के अपराध के मामले में ऐसा करना स्वीकार्य नहीं है। अब सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड सरकार और याचिकाकर्ता जवाब दाखिल करने के लिए 4 हफ्ते का वक्त दिया है। अब देखना होगा कि दोनों ही पक्ष अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट में क्या जवाब दाखिल करते हैं।

12 घंटे पहले यूट्यूब पर अपलोड अनब्रेकेबल" को अब तक 37 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा, केजरीवाल ने किया धन्यवाद

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म के रिलीज पर दिल्ली पुलिस ने रोक लगा दी थी। जिसको लेकर आम आदमी पार्टी के नेताओं ने विरोध प्रदर्शन भी किया था। रोक के बावजूद इसका ट्रेलर रिलीज किया गया था और अब इस फिल्म को यूट्यूब पर अपलोड कर दिया गया है। यूट्यूब पर अपलोड किए जाने के महज 12 घंटे बाद ही इस फिल्म को 37 लाख से ज्यादा लोग अब तक देख चुके हैं। "आप" ने आरोप लगाया कि भाजपा के कहने पर दिल्ली पुलिस ने अरविंद केजरीवाल के ऊपर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म की स्क्रीनिंग पर रोक लगा दी थी। दरअसल, दिल्ली में विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। राजनीतिक दलों ने चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। इस बीच आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और पूर्व दिल्ली अरविंद केजरीवाल पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म "अनब्रेकेबल" की स्क्रीनिंग पर रोक लग गई है। इसे लेकर "आप" ने भाजपा पर निशाना साधा है। रोक लगाने के बाद भी "आप" ने इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म का ट्रेलर रिलीज कर दिया था।

सैफ अली खान पर हमला करने वाला शहजाद निकला कुश्ती का खिलाड़ी

मुंबई। अभिनेता सैफ अली खान पर हमले के आरोपी शहजाद को लेकर नए-नए खुलासे हो रहे हैं। आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह बांग्लादेश में कुश्ती का खिलाड़ी था। आरोपी के अनुसार वह जिला के साथ ही नेशनल स्तर पर भी कुश्ती लड़ चुका है।

आरोपी शहजाद ने पुलिस को बताया की वो बांग्लादेश में कुश्ती का खिलाड़ी था और कम भार वर्ग में कुश्ती खेलता था। आरोपी जिला स्तर और नेशनल चैंपियनशिप में

अपना दम खम दिखाता था। कुश्ती का खिलाड़ी होने की वजह से वह सैफ अली खान पर हमला करने में कामयाब रहा।

आरोपी शहजाद को लेकर मुंबई क्राइम ब्रांच ने यह भी बताया कि सैफ पर हमले के बाद उसने 3 से 4 बार अपने कपड़े बदले थे। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी लगातार घूम रहा था। वह बांद्रा स्टेशन गया। वहां से दादर,वर्ली, अंधेरी और फिर ठाणे चला गया।

क्राइम ब्रांच के अनुसार आरोपी शहजाद पिछले साल सितंबर महीने में मुंबई आया था।

पूछताछ में यह भी सामने आया कि आरोपी मोहम्मद शहजाद ने सैफ अली खान के घर में घुसने से पहले कई मशहूर हस्तियों के घरों की रेकी की थी।

मराठा और ओबीसी के बीच बड़ा मुद्दा बनता जा रहा बीड़ में सरपंच की हत्या का मामला

क्या खेल में फंस गए चाणक्य के भतीजे?

महाराष्ट्र

एनसीपी के एक नेता ने कहा कि 'जरांगे-पाटिल के आंदोलन के बाद मराठवाड़ा में मराठों के बीच बीजेपी ने अपनी पकड़ काफी हद तक खो दी है। इतना कि बीजेपी नेता और तत्कालीन डिप्टी सीएम देवेन्द्र फड़णवीस ने पिछले साल चुनाव के दौरान बमुश्किल ही वहां प्रचार किया था। देशमुख के लिए न्याय के अभियान में धास के सबसे आगे होने से, अलग-थलग पड़े मराठों का एक वर्ग भाजपा के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत कर सकता है। दूसरी ओर, अगर कराड या मुंडे के

खिलाफ कार्रवाई की जाती है, तो ओबीसी को एक संकेत जाएगा कि अजीत पवार अपने लोगों को नहीं बचा सकते।

पिछले महीने बीड के मासाजोग गांव में सरपंच संतोष देशमुख की हत्या के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में राजनीतिक तूफान जारी है। केंद्र में राकांपा मंत्री धनंजय मुंडे, पार्टी प्रमुख और उप मुख्यमंत्री अजीत पवार के करीबी लेफ्टिनेंट बने हुए हैं। मराठवाड़ा क्षेत्र के बीड जिले के मुंडे जबरन वसूली मामले में अपने करीबी सहयोगी वाल्मिक कराड की गिरफ्तारी के बाद, कई सामाजिक संगठनों और विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) सहित विभिन्न हलकों से आलोचना का सामना कर रहे हैं। हालाँकि, उनके इस्तीफे की बढ़ती माँगों के बावजूद, मुंडे ने पद नहीं छोड़ने का फैसला किया है और अजित अब तक उनके साथ खड़े हैं।

सैकड़ो गरीब कमजोर मजलूम निराश्रित लोगों को स्वामी श्री योगी सत्यम ने दिया कम्बल

क्रियायोग अनुसंधान संस्थान के संस्थापक व अध्यक्ष स्वामी श्री योगी सत्यम ने कहा कि गरीबों की सेवा कर उन्हें आत्म संतोष होता है

कौशाम्बी । जागृत सेवा संस्थान के तत्वाधान में नेवादा विकासखंड के बलहेपुर रेही ग्राम पंचायत में सोमवार को क्रियायोग अनुसंधान संस्थान के संस्थापक व अध्यक्ष स्वामी श्री योगी सत्यम अखंड भारत संदेश समाचार पत्र के संपादक द्वारा सैकड़ो गरीब कमजोर मजलूम निराश्रित लोगों को कम्बल वितरण किया गया है, कंबल वितरण की जानकारी मिलते ही कार्यक्रम स्थल पर सुबह

से ही सैकड़ो ग्रामीण महिला पुरुषों की भीड़ लगी रही बढ़ते ठंड के बीच स्वामी श्री योगी सत्यम महाराज ने गरीबों को कम्बल दिया है कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे स्वामी श्री योगी सत्यम महाराज को माल्यार्पण कर आयोजको ने उनका जोरदार तरीके से स्वागत अभिनंदन किया है । इस मौके पर स्वामी जी ने कहा कि गरीबों की सेवा कर उन्हें आत्म संतोष होता है कम्बल वितरण कार्यक्रम के अवसर पर मंजू पाठक राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला अधिकार संगठन एवं सचिव जागृत महिला सेवा संस्थान व अनीता सिंह ग्राम प्रधान व योगेंद्र सिंह पूर्व ग्राम प्रधान व पूर्व जिला अध्यक्ष युवजन सभा समाजवादी पार्टी व राकेश सिंह राजू जिला अध्यक्ष किसान यूनियन श्रीमती अरुणा पूर्व प्रधान महिला जिला अध्यक्ष किसान यूनियन सुषमा पाल अंजू मनीषा जारा ज्ञान सिंह अयोध्या प्रसाद मंजीत यादव अजीत सिंह राम लौटना राम आसरे यादव कमलेश कुमार अजय यादव सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे ।

गौमूत्र के औषधीय गुण बताये, भड़के विपक्षी नेताओं ने कहा देश में अंधविश्वास को बढ़ावा दिया जा रहा है

नई दिल्ली

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के निदेशक वी. कामकोटि का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, जिसमें वह गोमूत्र के औषधीय गुणों की कथित तौर पर सराहना करते देखे जा सकते हैं। वह गायों की देशी नस्ल की रक्षा करने और जैविक खेती अपनाने के महत्व पर बोल रहे थे। कामकोटि ने मट्टु पोंगल (15 जनवरी 2025) के दिन ह्यगो संरक्षण शाला में आयोजित एक कार्यक्रम में यह बात कही। उन्होंने यह टिप्पणी एक संन्यासी के जीवन से जुड़ा एक किस्सा सुनाते हुए की, जिसने तेज बुखार होने पर गोमूत्र का सेवन किया और ठीक हो गया था। निदेशक ने कथित तौर पर गोमूत्र के एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल और पाचन सुधार गुणों के बारे में बात की और कहा कि यह बड़ी आंत से संबंधित बीमारी इरिटेबल बाउल सिंड्रोम जैसी समस्याओं के लिए उपयोगी है तथा इसके औषधीय गुण पर विचार करने की हिमायत की। उन्होंने जैविक खेती के महत्व और कृषि तथा समग्र अर्थव्यवस्था में मवेशियों की स्वदेशी नस्लों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए यह टिप्पणी की।

वी. कामकोटि के बयान पर सियासत गर्मा गयी है। एक पक्ष जहां उनके बयान के समर्थन में उतर आया है वहीं तर्कवादी संगठन द्रविड़ कषगम ने गोमूत्र संबंधी उनकी टिप्पणी की आलोचना करते हुए कहा कि यह सच्चाई के खिलाफ है और शर्मनाक है।

द्रमुक नेता टीकेएस एलंगोवन ने कामकोटि की टिप्पणी को लेकर उन पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि केंद्र सरकार की मंशा देश में शिक्षा को खराब करने की है। उधर, थानथई पेरियार द्रविड़ कषगम के नेता के. रामकृष्णन ने कहा कि कामकोटि को अपने दावे के लिए सबूत देना चाहिए या माफी मांगनी चाहिए।

चुनावी साल में बिहार होगा मालामाल!

नीतीश सरकार ने केंद्र को भेजा 32 पन्नों का ज्ञापन

बिहार

बुनियादी ढांचे की जरूरतों को संबोधित करते हुए, चौधरी ने बताया कि बिहार के 26 जिलों को बरसात के दौरान कुशल जल निकासी के लिए अतिरिक्त पुलों और पुलियों की आवश्यकता है।

राजनीतिक उतार-चढ़ाव के इतिहास के बाद, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पिछले साल घोषणा की कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मजबूती से खड़े रहेंगे, जिससे संकेत मिलता है कि भाजपा-जेडीयू गठबंधन अब पक्का हो गया है। यह साल जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि बिहार अक्टूबर-नवंबर में राज्य चुनाव की तैयारी कर रहा है। उनकी पार्टी को मोदी सरकार पर भरोसा है, जो 1 फरवरी को केंद्रीय बजट पेश करेगी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पिछले साल के बजट ने बिहार के साथ-साथ आंध्र प्रदेश में दो महत्वपूर्ण सहयोगियों की परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए अपना बटुआ खोल दिया था, जिन्होंने अपने दम पर बहुमत से पीछे रहने के बाद केंद्र में भाजपा को सरकार बनाने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस वर्ष के लिए, बिहार ने पहले ही सीतारमण को 32 पन्नों का एक ज्ञापन सौंपा है, जिसमें केंद्र से बिहार के विकास के लिए उदार धन आवंटित करने का आग्रह किया गया है।

प्रमुख मांगों में, बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने उत्तर बिहार में वार्षिक बाढ़ की समस्या से निपटने के लिए ऊंचे बांध

बनाने के लिए नेपाल सरकार के साथ सहयोग करने का आह्वान किया है। चौधरी ने बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रम (एफएमपी) के तहत गंडक, कोसी और कमला जैसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय और अंतरराज्यीय नदियों को शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मेरा आपसे आग्रह है कि गंडक, कोसी और कमला जैसी नदियों से आने वाली बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए 90% केंद्रीय सहायता वाली योजनाओं को मंजूरी दें।

बुनियादी ढांचे की जरूरतों को संबोधित करते हुए, चौधरी ने बताया कि बिहार के 26 जिलों को बरसात के दौरान कुशल जल निकासी के लिए अतिरिक्त पुलों और पुलियों की आवश्यकता है। उन्होंने अनुमान लगाया कि इस निर्माण में लगभग 13,000 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। उन्होंने केंद्र से एक अतिरिक्त उधार सीमा की अनुमति देने का भी अनुरोध किया, जिसमें बिहार के लिए 1% जीएसडीपी छूट का सुझाव दिया गया जब तक कि इसकी प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत तक नहीं पहुंच जाती।

नशे की लत ने छीनी खुशियां मां-बेटे सहित तीन की मौत

अखंड भारत संदेश

रविवार को शंकरगढ़ में पलटी थी तेज रफ्तार बोलेरो गाड़ी

शंकरगढ़। रविवार को हुए सड़क हादसे में घायल मां और गर्भवती पत्नी के कोख में पल रहे गर्भस्थ शिशु की सोमवार की सुबह मौत हो गई। बता दें कि रविवार को हुए हादसे में एक युवक की जान चली गई थी, वहीं गंभीर रूप से घायल परिजनों का इलाज एक निजी नर्सिंग होम में चल रहा था, सोमवार की सुबह मां और गर्भस्थ शिशु की मौत हो गई।रविवार की शाम थाना क्षेत्र के जनवा के पास एक तेज रफ्तार बोलेरो अनियंत्रित होकर पलट गई, जिसमें युवक की मौत हो गई थी, बताया जा रहा है कि युवक नशे की हालत में था। बोलेरो में सवार मां के साथ गर्भवती पत्नी भी घायल हो गए थे । सूचना पर शंकरगढ़ पुलिस पहुंची और घायलों का इलाज करवाया। जानकारी के मुताबिक सोनौरी ,थाना सोहागी जिला रीवा मध्य प्रदेश के कुछ लोग शंकरगढ़ इलाज कराने के लिए आए थे। बोलेरो सवार सभी लोग ओबरी गांव में अपने रिश्तेदारी से वापस वह अपने घर सोनौरी जा रहे थे। तभी जनवा के पास तेज रफ्तार बोलेरो अनियंत्रित होकर पलट गई। बोलेरो में सवार पुष्पा 32 पत्नी दीपक, सरोज सिंह 60 पत्नी राजेश सिंह , राशी 5 पुत्री दीपक सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। वहीं बोलेरो चालक दीपक 38 पुत्र राजेश सिंह की मौके पर मौत हो गई।सूचना पर शंकरगढ़ थानाध्यक्ष ओम प्रकाश तथा एंबुलेंस पहुंची और सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ ले आई । सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में घायलों का प्राथमिक उपचार किया गया इसके बाद परिजन उन्हें इलाज के लिए किसी निजी अस्पताल में ले गए थे।

घूरी व परवेजाबाद गांव में बिजली बिना दर्जनों घर अंधेरे में रहने पर मजबूर

बारा। बारा क्षेत्र में ऐसी बस्ती आज भी है जहाँ पर बिजली नही पहुँच सकी, समाज सेवी से लेकर ग्रामीण मांग करते रहे लेकिन घरो में अंधेरा ही कायम रहा।सरकार ने जब से प्राइवेट कम्पनियो को बिद्युती करण का ठीका दिया तब से उन्ही गांव के घरों तक बिजली पहुँची जिसकी मजबूत पकड़ थी,सौभाग्य योजना के द्वारा गांवो में सर्वे करके हर घर बिजली पहुँचाने का कार्य प्राइवेट बिजली कम्पनी को दिया जिससे कम्पनी ने जमकर मनमानी तरीके से अपना काम किया जिसकी वजह से आज तक परवेजाबाद,असवा गांव के दर्जनों घर मे बिजली नही पहुँच पाई।भाजपा कार्यकर्ता शिवेंद्र सिंह ने कई बार परवेजा बाद के 25 घर मुसहर बस्ती बस्ती,असवा गांव के डेरा के दर्जनों हरिजन बस्ती के घरो के लिए बिजली की बिद्युती करण करने की मांग किए लेकिन नतीजा शून्य निकला, इसी तरह घूरी गांव के तालाब बस्ती पर दिवाकर मिश्र के डेरा से लेकर भंडारी, कल्लू भारतीया के बस्ती तक बिजली नही पहुँच सकी है,ग्राम प्रधान प्रतिनिधि गोपाल पाण्डेय घूरी कई बार इस बस्ती के लिए मांग करते रहे है लेकिन आज तक नही बिजली पहुँची है।खबर व मांग के बाद प्राइवेट कंपनी के कर्मचारी सर्वे के नाम पर घूम कर आ जाते है इसी तरह करते वर्षो बीत गया गरीब आज भी रात अंधेरे में बिताने पर मजबूर है।इनके घरों में कब बिजली जलेगी किसी को नही पता सिर्फ गरीब आस लगाए बैठे है कि हमारे घर मे कब तक होगा बिजली का उजाला।

न्यूज झरोखा

किसान सम्मान निधि का निः शुल्क केवाईसी शिविर का आयोजन

मऊआइमा। सैकड़ों किसानों का नि?ः शुल्क (के वाई सी)शिविर का आयोजन मऊआइमा के ग्राम सभा छाता के कंचन नगर में समाज सेवक आसीप पटेल के द्वारा शिविर लगाकर सैकड़ों किसानों का फ्री (के वाई सी)कराया गया। प्रधान मंत्री सम्मान निधि योजना से सैकड़ों किसानों को लाभान्वित करने के लिए उक्त कदम उठाया गया।इस सराहनीय कदम की ग्रामसभा छाता के रामप्रसाद पटेल ,राकेश चौहान, भोला पाल ,जगन्नाथ सरोज, सोहन पटेल ,शिव बाबू पटेल, सुरेंद्र यादव ,सभा लाल पटेल, फसादी पटेल ,रामहित, राम सूरत पटेल ,हरि सरोज आदि ने धन्यवाद ज्ञापित किया है।

खेलों से होता है मानसिक एवं शारीरिक विकास

मांडा। क्षेत्र के टिकरी गांव में अष्टभुजा क्रिकेट क्लब टूनार्मेंट कार्यक्रम का फीता काटकर शुभारम्भ किया। रविवार को टिकरी गांव में अष्ट भुजा क्रिकेट क्लब का आयोजन किया ' कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पं. राम कृष्ण त्रिपाठी ने? फीता काटकर शुभारम्भ किया और कहा कि खेल से शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। बच्चों के लिए खेल जरूरी है तथा इससे शरीर स्वस्थ रहता है? इसलिए बच्चों को खेलना चाहिए। क्रिकेट टूनार्मेंट का मैच मुंबई इलेवन मडौला और आर.सी.बी. दिघिया के बीच प्रारम्भ हुआ । जिसमें आर.सी.बी.दिघिया की टीम विजेता रही।

धान की उपज कम होने से क्रय केंद्रों का नहीं हो पा रहा पूरा लक्ष्य

मांडा। नहरों में यथासमय पानी न आने, समितियों में खाद की किल्लत आदि कारणों से मांडा क्षेत्र में धान की उपज बेहद कम हुई, जिससे मांडा क्षेत्र के इकलौते धान क्रय केन्द्र का भी लक्ष्य पूरा नहीं हो पा रहा है। मांडा क्षेत्र में विपणन विभाग द्वारा सुरवांदलापुर गाँव में इकलौता सरकारी धान क्रय केन्द्र खोला गया है। अभी तक इस धान क्रय केन्द्र पर कुल 12534 क्विंटल धान की तौल हुई है, जबकि इस क्रय केन्द्र का लक्ष्य तीस हजार कुंतल धान खरीद का रखा गया है। क्षेत्रीय विपणन अधिकारी सुभाषचंद्र सिंह ने जानकारी दी कि किसानों को प्रधानों व फोन के माध्यम से धान बेचने और क्रय केन्द्र लाने के लिए प्रेरित किया जाता है, लेकिन ज्यादातर किसान इस बार अच्छी उपज न होने के कारण धान बेचने में असमर्थता जाहिर कर रहे हैं। कुछ किसानों ने तो यह भी बताया कि इस बार साल भर घर का खर्च चलाने लायक भी धान नहीं हुआ, जबकि इसके पहले इसी धान की फसल से एकाक शादी व्याह हो जाता था। धान की उपज कम होने से किसानों में भी काफी चिंता है। क्षेत्र के मसौली, बरहाकला दसवार, हाटा, दोहथा, सिरौंठी, उल्दा आदि तमाम गाँव के किसानों ने धान की फसल अच्छी न होने का कारण भौतिक, सरकारी व दैविक आपदा बताया। यथासमय खाद और नहरों में पानी न होना भी धान की अच्छी उपज में बाधक रहा।

प्राथमिक विद्यालय मड़फा कला मार्ग विहीन, रास्ता बनवाने की मांग

रास्ता के लिए चकमार्ग तो नहीं नाले के किनारे से बनवाऊंगी मार्ग पुष्पा देवी

कोरांव। कोरांव के मड़फा कला में साथी सरकारी स्कूल तक आने जाने के लिए सड़क न होने से विद्यालय के बच्चों, अभिभावकों, अध्यापकों ग्रामीणों को दिक्कतें हो रही हैं। इस संदर्भ में ग्राम प्रधान पुष्पा देवी उनके प्रतिनिधि प्रेम चंद्र ने बताया नाले के किनारे किनारे बच्चे अवशेष भूमि से विद्यालय तक मार्ग बनाने के लिए आई डी बनवाई जा रही है। जिससे मार्ग लोगों को सुलभ हो सके। ग्राम प्रधान पुष्पा देवी ने बताया कि विद्यालय आवागमन हेतु मार्ग बहुत जल्द बनवाऊंगी। उन्होंने बताया इस संदर्भ में विधायक कोरांव से भी उक्त विद्यालय के रस्ते सहित पांच रास्तों का प्रस्ताव मांग पत्र दिया है। और विद्यालय के आवागमन हेतु मनरेगा अथवा राज्य वित्त आदि निधि से निर्मित कराऊंगा।

घायल युवक की उपचार के दौरान मौत

मऊआइमा। मऊआइमा के एक युवक की ट्रक दुर्घटना में मध्य प्रदेश के जिला सिवनी थाना धूमा में बुरी तरह जख़्मी हो गया। उपचार के दौरान मौत की खबर सुनकर घर में कोहराम मचा हुआ है। मऊआइमा के ग्राम महमदपुर सराय अली निवासी अफसार अहमद उर्फ अफसार नेता 42 वर्ष पुत्र मोहम्मद हनीफ ट्रक खरीदे हुए हैं। बताया गया है ट्रक चालक के अवकाश पर होने के कारण ट्रक अफसार अहमद स्वयं चला रहे थे।वह अंगूर लाद कर ट्रक से, कहीं जा रहे थे। बताया गया है कि बीती रात एक अन्य ट्रक द्वारा मध्य प्रदेश के जिला सिवनी के थाना धूमा क्षेत्र में टक्कर मार दिए जाने से ट्रक क्षतिग्रस्त हो गई जबकि ट्रक चला रहे अफसार अहमद बुरी तरह जख़्मी हो गए। जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां उपचार के दौरान मौत हो गई। बताया गया है कि सोमवार को अफसार अहमद के शव को पोस्टमार्टम के लिए पुलिस ने भेजा है। जहां पोस्टमार्टम के बाद शव घर लाया जाएगा। अफसार अहमद की मौत की सूचना पर घर में कोहराम मचा हुआ है। बताया गया है कि मृतक अफसार अहमद के दो पुत्रियां तीन पुत्र हैं। मंगलवार को दोपहर बाद महमदपुर सराय अली गांव में मिट्टी दी जाएगी।

सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर इफको को मिला ग्रीनटेक फाउंडेशन से अवार्ड

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। इफको उर्वरक के क्षेत्र में ही अग्रणी नहीं है अपितु विभिन्न सामाजिक कार्यों में भी इफको द्वारा समय-समय पर बढ़- चढ़कर प्रतिभाग किया जाता है। जिसमें इफको के विभिन्न अधिकारियों की सहभागिता रहती है। यह बातें सोमवार को ग्रीनटेक फाउंडेशन की तरफ से ग्रीनटेक कॉरपोरेट कॉमुनिकेशन एंड पब्लिक रिलेशन अवार्ड 2024 मिलने पर इफको के जन-संपर्क अधिकारी स्वयं प्रकाश को बधाई देते हुए इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया ने कही। उन्होंने बताया की इफको को यह अवार्ड जनसंपर्क अनुभाग द्वारा गत वर्ष किए गए सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर मिला है।

गत वर्ष जनसम्पर्क अनुभाग द्वारा नमो किसान, ड्रोन दीदी वितरण के साथ ही कोर्डेट की सहायता से नैनो उर्वरक की जागरूकता, ड्रोन प्रशिक्षण हेतु विभिन्न स्थानों पर किसानों के लिए शिविर आयोजन, विश्व पृथ्वी दिवस पर सेमिनार का आयोजन, पर्यटन दिवस पर सहभागिता के अलावा शहर के विभिन्न स्थानों पर बैनर व होर्डिंग के माध्यम से नैनो उर्वरक के महत्व का प्रचार प्रसार किया गया था जिसमें किसानों को नैनो उर्वरक किट का वितरण भी किया गया था। उन्होंने अवार्ड मिलने पर जनसंपर्क अनुभाग के अधिकारियों के साथ ही सभी को बधाई दी। मौके पर इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया,जनसंपर्क अधिकारी स्वयं प्रकाश, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विजय यादव सहित इफको के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

ट्यूबवेल का ट्रांसफार्मर जल जाने से सूख रही गेंहू की फसल, जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

बारा। क्षेत्र के अमिलिया तरहार स्थित ट्यूबवेल में लगा ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण गेंहू की फसल चौपट होने के कगार पर है। किसान द्वारा कड़ी मेहनत और मशक्कत के बाद गेंहू की फसल खेतों में बिना पानी के सूखने के कगार पर है। विगत कई दिनों से ट्रांसफार्मर जला हुआ है, जिसकी शिकायत ग्रामीणों द्वारा की गई है लेकिन बिजली विभाग की लचर व्यवस्था के कारण आज तक जला हुआ ट्रांसफार्मर बदली नहीं किया जा सका, जिससे किसान परेशान हैं। अमिलिया तरहार के किसानों ने बताया कि रात दिन छुट्टा पशुओं से खेतों की रखवाली करते हुए गेंहू की फसल को बचाया गया और अब पानी की आवश्यकता है तो ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण गेंहू की फसल चौपट हो रही है।अगर समय से खेतों को पानी नहीं मिला तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। बिजली विभाग के मनमानी रवैये से पूरा तरहार क्षेत्र परेशान है, किसी का बिजली बिल बहुत ज्यादा है तो किसी गांव में बिजली की समस्या है, जिसे कोई अधिकारी संज्ञान नहीं ले रहा है। अमिलिया तरहार के किसान प्रदीप पासवान,अपु तिवारी, गोलू,भोला पाल, रावेंद्र तिवारी,विनय कुमार मिश्रा ने बताया कि शिकायत के बाद भी ट्रांसफार्मर नही बदला गया, जिससे खेतों में गेंहू की फसल सूखने के कगार पर है।

कराटे कक्षाओं के संचालन से आत्मरक्षा हेतु छात्र छात्राएं बनेंगी आत्मनिर्भर : अंकिता खेरा

कराटे की विशेष कक्षाओं का हुआ शुभारंभ

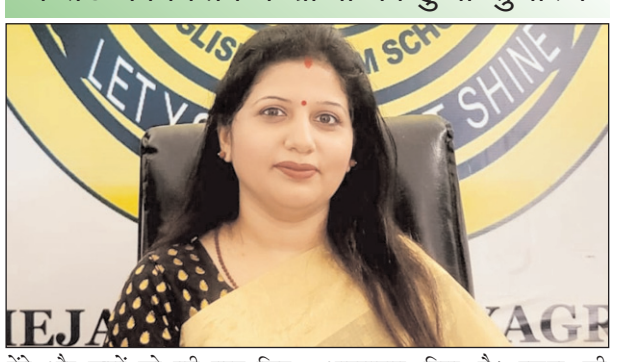

मेजा। सोमवार को मेजारोड के सबसे लोकप्रिय स्कूल सेंट पीटर्स को-एजुकेशनल इंग्लिश मीडियम स्कूल में कराटे के विशेष क्लास शुभारंभ हो गया। कराटे क्लास के उद्घाटन समारोह के दौरान स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती अंकिता खेड़ा ने कहा कि यह नए साल के अवसर पर छात्रों के लिए एक उपहार है। उन्होंने कहा कि नर्सरी से दसवीं तक के छात्रों के लिए कराटे की कक्षाएं शुरू की गई हैं। कराटे की कक्षाएं छात्रों को आत्मनिर्भर बनने और सबसे महत्वपूर्ण रूप से आत्मरक्षा के लिए सिखाने के लिए हैं। उन्होंने कहा कि आज के समय में आत्मरक्षा के लिए करते का अनुभव होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह छात्रों को आत्मविश्वास और जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करता है। इसी क्रम में कराटे कोच अव्यक्त खेड़ा ने कहा कि वह अपना उत्कृष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे और छात्रों को पूरी तरह फिट बनाएंगे। गौरतलब है सेंट पीटर्स को एजुकेशनल स्कूल में कराटे कक्षाओं की शुरूआत से छात्र छात्राएं बेहद खुश दिखे। उल्लेखनीय है कि स्कूल के प्रबंध तंत्र की इस पहल का स्कूल के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने भी सराहना की है और इसे सफलता की नई ऊंचाइयों पर ले जाने का भी आश्वाशन दिया है। स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती खेरा के अनुसार कराट की ये कक्षाएं निःशुल्क हैं,इसके लिए छात्र छात्राओं से किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाएगी। उनका मानना है कि स्कूल के छात्र छात्राओं के बेहतर एवं उज्जवल भविष्य तथा आत्मरक्षा के लिए यह एक नया कदम है।

कुंभ मेले में अग्निकांड स्थल पहुंच पीड़ितों से मिले सांसद

महाकुंभनगर। तीर्थराज प्रयागराज में रविवार को सेक्टर 19 में भीषण आग लग गई जिसकी चपेट मे गीता प्रेस सहित कई कल्पवासियों के टेंट आग की भेंट चढ़ गए लेकिन ईश्वर की अनुकंपा से जनहानि नहीं हुई ' इस महाकुंभ की प्रकृति को बदलकर डिजिटल कुंभ बना दिया गया है ' मेले में इलाहाबाद के सांसद उज्जवल रमण सिंह तथा कांग्रेस अध्यक्ष प्रदीप मिश्र अंशुमन अपने साथियों के साथ घटना स्थल पर जाकर पीड़ित कल्पवासियों एवं आग से प्रभावित गीताप्रेस तथा अन्य लोगों से मिलकर जानकारी प्राप्त किया ' इलाहाबाद के सांसद उज्जवल रमण सिंह ने कहा कि सबसे पहले उन पीड़ित कल्पवासियों को जल्द से जल्द पुनर्वासित किया जाए जो आग के कारण अपनी जिंदगी इस ठंड में खुले में बिताने को मजबूर हैं ' उन्होंने आगे कहा कि मेले में वीवीआईपी व्यवस्था समाप्त कर सभी के साथ आम श्रद्धालु जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए , क्योंकि जब कोई वीवीआईपी आता है तो सारा पुलिस प्रशासन उनकी सुरक्षा में लग जाता है और मेले के चारों तरफ बहुत भीषण ट्रैफिक जाम हो जाता है जिससे आम जनमानस को बहुत परेशानी झेलनी पड़ती है, बीमार लोगों को ले जाने वाली एम्बुलेंस भी उसी जाम में फंसी रह जाती है, स्कूल से छूटने पर बच्चे फंसे रहते हैं इसलिए रोज रोज आने वाले वीवीआईपी को स्वयं या सरकार अंकुश लगाए क्योंकि महाकुंभ में लोग भारी संख्या में पुण्य लाभ प्राप्त करने आए हैं ऐसे में अव्यवस्था न उत्पन्न हो ये सरकार की महती जिम्मेदारी है ।

संपूर्ण समाधान दिवस में नायब तहसीलदार ने संभाला मोर्चा, कुल 161 शिकायतें हुईं प्राप्त निस्तारण शून्य

कोरांव। समाधान दिवस कोरांव में बतौर प्रभारी अधिकारी नायब तहसीलदार कोरांव राम मूरत ने मोर्चा संभाला और शिकायतों को संबंधित को निस्तारित के निर्देश दिए। समाधान दिवस में सबसे सदैव टॉप पर रहने वाले राजस्व विभाग के अकेले 47 मामले और पुलिस विभाग के दूसरे स्थान पर पुलिस विभाग,विकास विभाग के 21 शिक्षा विभाग के मात्र दो,समाज कल्याण के दो स्वास्थ्य विभाग के शून्य अन्य विभागों के कुल 56 मामले आए। निस्तारण शून्य रहा।

स्वामित्व योजना के तहत पात्रों को मिली घरौनी

मांडा। क्षेत्र के सुरवांदलापुर में ग्राम प्रधान व लेखपाल के नेतृत्व में 169 पात्रों को घरौनी प्रमाण पत्र वितरित किया गया। प्रदेश सरकार की ग्रामीण स्वराज योजना को आगे बढ़ाते हुए ग्रामीणों को आबादी व घर की स्थाई संपत्ति का कानूनी हकदार बनाने के लिए स्वामित्व योजना के तहत 169 लोगों को घरौनी सौंपी गई। ग्राम प्रधान सुरवांदलापुर सत्यनारायण पटेल, ग्राम पंचायत सचिव बृजेश द्विवेदी, लेखपाल अमरनाथ की मौजूदगी में लोगों को घरौनी पर डिजिटल सिग्नेचर पूर्ण कर चुके लोगों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

चिल्ला गांव के अमृत सरोवर तालाब के अंदर चर रही भेड़, झार झँखड़ का अंबार,पानी नदारद

बारा। जसरा ब्लाक के चिल्ला गौहानी में दुबे तालाब अमृत सरोवर तालाब के सौन्दरी करण में लाखों रुपए सरकार का खर्च हुआ।ताकि जल स्तर से लेकर स्वक्ष जगह ग्रामीण सुबह शाम टहल सके।इस जगह पर बना है, बहुत ही अच्छी जगह पर बना है। प्रधानमंत्री सड़क जसरा जाने वाली श्री बाला जी धाम मन्दिर के बगल स्थिति है।फिर भी उपेछा का शिकार होता चला जा रहा है। तालाब में पानी नदारद है वही उसके अंदर भेड़ की झुंड चरवाहे लेकर चरा रहे है। घास फूस झाड़ियां उगी हुई है।जिम्मेदार अपनी जिम्मेदारी से इस तालाब से कोसो दूर है केवल बार बार पक्का मेंटिनेंस किया जा रहा है ताकि सरकारी धन इसके नाम का हजम हो सके। बेहतर होता इसकी सही ढंग से चारों मेड़ की सफाई से लेकर इसमें जलभराव होता,लेकिन ऐसा बिल्कुल नही है। ब्लाक के जिम्मेदार सम्बंधित अधकारियों को इसी सड़क से आना जाना लगा रहता है फिर भी इसकी दुर्दशा को नही देख सकते है,सिर्फ कागज तक विकास को सीमित करके रख दिया है।अगर अपनी जिम्मेदारी समझ कर देखते तो आज जो सरकार का धन लगा है उसका ग्रामीणों से लेकर राहगीरों तक सदुपयोग में जरूर होता।

सरकारी धन का हो रहा दुरूपयोग, चारागाह बना अमृत सरोवर तालाब

रात भर जागकर फसलों की रखवाली कर रहे हैं किसान

अखण्ड भारत सन्देश

मांडा। बेसहारा गोवंशों को आश्रय देने के लिए गोशालाएं बनाई तो जरूर गई हैं लेकिन योजना को पलीता लगाने में ग्राम सभाओं के जिम्मेदार किसी भी प्रकार की चूक नहीं कर रहे हैं। सड़कों पर घूम रहे गोवंशों के झुंड को आश्रय स्थल ले जाने के बजाय लोगों द्वारा उन्हें छुट्टा छोड़ दिया गया है। विकास खंड मांडा के ग्रामीण क्षेत्रों में इन दिनों बेसहारा गोवंशों का झुंड फसलों पर हमला बोल रहा है। तमाम तरह की दैविक आपदा से बचाने के बाद किसानों की हाड़ तोड़ मेहनत पर अब भूखे प्यासे गोवंश डाका कर रहे हैं। फसलों की रखवाली करने के लिए रात भर जाग कर फसलों की रखवाली कर रहे हैं। बेसहारा गोवंशों से जहां किसानों की नींद उड़ गई है। वही ग्राम सभाओं में संचालित गो आश्रय स्थल के जिम्मेदार चैन की नींद सो रहे हैं। गोवंशों की रक्षा के लिए तमाम तरह की समितियां भी बनी है। लेकिन सब कागज और रजिस्टर की शोभा बढ़ा रही हैं। सड़कों पर घूम रहे इन बेसहारा गोवंशों को आखिरकार सहारा कब मिलेगा। लोगों का मानना है कि, घूम रहे गोवंशों को आश्रय स्थल पहुंचा दिया जाए तो कई तरह की कठिनाइयां दूर हो जाएगी। एक तो लोगों की फसल बच जायेगी दूसरे गोवंश और मनुष्यों की जान भी सुरक्षित रहेगी। गोवंशों से टकराने के बाद क्या लोगों की जान सुरक्षित रहेगी। यह चर्चा का विषय बना हुआ है। मांडा विकास खण्ड के गिरधरपुर ग्राम पंचायत जो पहाड़ी से सटा हुआ है और पहाड़ी के उत्तर में गिरधरपुर व दक्षिण में दशवार, ऊचडीह ग्राम पंचायत की सीमा प्रारम्भ होती है जहां कि किसानी की संख्या अधिक है और किसानी पर निर्भर है ' उक्त ग्राम पंचायतो के किसानों की मांग है कि अति शीघ्र गौशाला का निर्माण कर अवारा पशुओ को सुरक्षित कर फसल को भी सुरक्षित करने की मांग की है।

सफाई कर्मचारी नहीं, ये स्वच्छता सेनानी हैं : मनोहर लाल खट्टर

केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री ने नगर निगम में सफाईकर्मियों को किया सम्मानित

सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कंट्रोल रूम का किया निरीक्षण, कहा- यह अचीवमेंट से कम नहीं

महाकुम्भ नगर। केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी कार्यों के मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि, किसी भी शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने में सफाईकर्मी नींव का पत्थर होते हैं। आज पूरा विश्व दिव्य-भव्य और स्वच्छ महाकुम्भ देख पा रहा है तो इसका सर्वाधिक श्रेय स्वच्छता के वाहक सफाई कर्मचारियों को ही जाता है। उन्होंने कहा कि ये सफाईकर्मी नहीं, बल्कि स्वच्छता सेनानी हैं। केंद्रीय मंत्री खट्टर ने सोमवार को प्रयागराज नगर निगम में सफाई कर्मचारियों को माला पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर उन्हें सम्मानित किया। इस दौरान सफाई कर्मचारियों को किट और ट्रैक सूट भी वितरित किया।

सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कंट्रोल रूम भी देखा : पार्षदगणों के साथ केंद्रीय मंत्री खट्टर, प्रदेश के नगर विकास मंत्री एके शर्मा और महापौर गणेश केसरवानी ने नगर निगम का नवनिर्मित सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कंट्रोल रूम देखा। इस दौरान नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने उन्हें कंट्रोल रूम की कार्यप्रणाली, शहर की सफाई व्यवस्था, मॉनिटरिंग और कचरा निस्तारण के साथ संचालित एमआरएफ, एआरएफ, बायो सीएनजी और सीएंडडी प्लांट के बारे में जानकारी दी। नगर आयुक्त ने बताया कि प्लांट के जरिए निगम को सालाना 40 लाख रुपए का रेवेन्यू भी प्राप्त हो रहा है। वहीं गीले कचरे का निस्तारण कर सीएनजी बनाया जाएगा। इसका वितरण एओएल और घरों में पाइप के जरिए होगा।

एआई से स्वच्छता मॉनिटरिंग अचीवमेंट से कम नहीं : शहर की एआई मॉनिटरिंग और समस्याओं का त्वरित निस्तारण होता देख केंद्रीय मंत्री खट्टर ने नगर निगम के कार्यों की सराहना की और शहर को स्वच्छ बनाए रखने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन 70 किलोमीटर तक मुख्य सड़कों के दायरे को कवर कर स्वच्छ बनाना काबिल-ए- तारीफ है। शहर में अतिक्रमण, सड़क किनारे पड़े कूड़े, खराब स्ट्रीट लाइट, आवारा पशुओं की निगरानी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से की जा रही है। यह अपने आप में अचीवमेंट है। इसके बाद केंद्रीय मंत्री केंद्रीय सर्विस सेल में पहुंचे और वहां पर चल रहे काम-काज की जानकारी ली। इस दौरान नगर विकास मंत्री एके शर्मा और महापौर गणेश केसरवानी ने केन्द्रीय मंत्री को महाकुंभ-2025 का मोमेंटो भेंट किया।

श्रीपंच दशनाम जूना अखाड़ा एवं राष्ट्रीय सैनिक संस्था की प्रेसवार्ता एक फरवरी को

मेजा। आगामी एक फरवरी को श्रीपंच दशनाम जूना अखाड़ा कैंप मे संत और सैनिको की एक प्रेस वार्ता आयोजित किया गया है जिसे जूना अखाड़ा के अंतरराष्ट्रीय प्रवक्ता महंत नारायण गिरि महाराज,राष्ट्रीय सैनिक संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी और पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष प्रेमशंकर सिंह संबोधित करेंगे। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय सैनिक संस्था यह 24 वर्ष पुराना, पंजीकृत,अराजनैतिक संगठन है जिसमे देश भक्त नागरिक और पूर्व सैनिक दोनों ही शामिल हैं। श्रीपंच दशनाम जूना अखाड़ा एवं राष्ट्रीय सैनिक संस्था की तरफ से 1 फरवरी को यह आयोजन दूधेश्वर नाथ महादेव महाकुंभ मेला शिविर सेक्टर 20 संगम लोवर मार्ग साखी ब्रिज के नीचे अपराह्न एक बजे प्रयागराज में किया गया है। इस मौके पर प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़े सभी मीडिया के लोगों को कार्यक्रम के आयोजक ने पहुंचने की अपील किया है।

न्यूज झरोखा

महापौर ने किया विद्युत शवदाह गृह के निर्माण कार्य का लोकार्पण

प्रयागराज। सोमवार को महापौर उमेश चंद्र गणेश केसरवानी ने फाफामऊ में नगर निगम द्वारा विद्युत शवदाह गृह के निर्माण कार्य का लोकार्पण किया। इस शवदाह गृह का निर्माण 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत कराया गया । महापौर ने कहा कोरोना काल के समय व्यक्ति शव को गंगा जी में ही छोड़ देता था, जिसको संज्ञान लेते हुए आज इस शवदाह गृह का लोकार्पण हुआ, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संकल्पना है स्वच्छ भारत स्वच्छ प्रयाग अभियान के तहत आज इस 3 करोड रुपए की लागत से शवदाह गृह का लोकार्पण हुआ। यह भी कहा फाफामऊ घाट पर फाफामऊ के तरफ से आने वाले लोगों को बहुत ही असुविधा का सामना करना पड़ता था शवदाह गृह होने से लोगों की असुविधा कम होगी, जिससे लोगों को अधिक समय का लाभ मिलेगा।

कल्पवासी शिविर में लगी आग, मची अफरातफरी

महाकुम्भ नगर। मोरी मार्ग पर सोमवार की शाम एक कल्पवासी शिविर में गैस लीकेज के कारण आग लग गई। आग की खबर सुनते ही आसपास के श्रद्धालु अपने-अपने शिविरों से बाहर निकल आए। आग की लपटें और उठते धुएं को देखकर कुछ समय के लिए अफरातफरी मच गई। हालांकि श्रद्धालुओं ने सूझबूझ दिखाते हुए फायर ब्रिगेड के पहुंचने से पहले ही पानी और बालू डालकर आग पर काबू पा लिया। बिहार के शिवान जिले के नागेंद्र नाथ तिवारी अपनी पत्नी के साथ अनंत मिश्रा पंडा के शिविर में कल्पवास कर रहे थे। रविवार शाम फलाहार बनाते समय गैस सिलेंडर में लीकेज होने से आग लग गई। आग लगने के बाद शिविर में शोरगुल मच गया और लोग बाल्टियों में पानी भरकर तथा बालू डालकर आग बुझाने में जुट गए। जब तक आग बुझाई जा सकी पूरा शिविर और उसमें रखा सामान जलकर राख हो गया। मौके पर दर्जनभर फायर ब्रिगेड की गाड़ियां पहुंचीं और स्थिति का जायजा लिया।

महाकुंभ में पुण्य के भागी बनेंगे गौतम अदाणी

महाकुंभनगर। दुनिया के जाने माने उद्योगपति गौतम अदाणी आज मंगलवार को महाकुंभ में पुण्य के भागी बनेंगे। वह महाकुंभ 2025 के मौके पर प्रयागराज की यात्रा कर रहे हैं। अपनी यात्रा के दौरान वह इस्कॉन पंडाल में भंडारा सेवा करेंगे। इसके साथ-साथ त्रिवेणी में पूजा-अर्चना के बाद अतिप्रसिद्ध बड़े हनुमान जी के दर्शन करेंगे। अदाणी समूह इस वर्ष इस्कॉन और गीता प्रेस के साथ मिलकर महाकुंभ आने वाले श्रृद्धालुओं की सेवा में लगा हुआ है। इस्कॉन के साथ मिलकर अदाणी समूह प्रतिदिन 1 लाख श्रृद्धालुओं को महाप्रसाद का वितरण कर रहा है। इसके अतिरिक्त गीता प्रेस के साथ मिलजुल कर अदाणी समूह 1 करोड़ आरती संग्रह का वितरण कर रहा है।

प्रयागराज की कवियत्री को साहित्य गौरव उपाधि मिलने पर जताया खुशी

नैनी। नैनी प्रयागराज की कवियत्री वन्दना शुक्ला को साहित्य गौरव की उपाधि से विभूषित किये जाने पर कवियों व साहित्यकारों ने हर्ष व्यक्त किया है। राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा रविवार को लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक द्वारा उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव जितेन्द्र कुमार, डॉ अखिलेश मिश्रा, डॉ सीमा गुप्ता सहित संस्थान के अन्य प्रमुख लोग उपस्थित रहे। डॉ वन्दना शुक्ला को साहित्य गौरव सम्मान मिलने पर कवि साहित्यकार जगदम्बा प्रसाद शुक्ल ने इसे प्रयागराज की प्रमुख उपलब्धि बताया। वंदना शुक्ला ने भारत के विभिन्न प्रदेशों में आयोजित कवि सम्मेलनों में प्रयागराज का नाम रौशन किया है। डॉ शंभु नाथ त्रिपाठी अंशुल, रामनाथ त्रिपाठी, उमेश श्रीवास्तव, गजेंद्र प्रताप सिंह, अवध नारायण अनगढ़, रामलखन शुक्ल, राधा शुक्ला, प्रीति शुक्ला आदि कवि साहित्यकारों ने हर्ष प्रकट करते हुए उन्हें बधाई दी है।

नगर निगम महापौर कक्ष में नगर विकास मंत्री ने पार्षदों से की मुलाकात

प्रयागराज। सोमवार को नगर निगम मुख्यालय सिविल लाइंस में नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने महापौर उमेश चंद्र गणेश केसरवानी के कक्ष में पार्षदों से मुलाकात की इस बीच मंत्री ने पार्षदों की समस्या भी सुनी एवं उसके निर्धारण हेतु उच्च अधिकारियों को कहा एवं पार्षदों से मंत्री ने आग्रह भी किया इस समय महाकुंभ है आप सभी की महाकुंभ पर नैतिक जिम्मेदारी है कि महाकुंभ का मेला आपके नेतृत्व में अच्छे से संपन्न हो।

भागीरथी गंगा से तन तथा भागवती गंगा से मन की होती है शुद्धि : आचार्य विष्णुदत्त

प्रयागराज। महाकुम्भ भागीरथी गंगा से तन की शुद्धि होती है। भगवती गंगा से मन की शुद्धि होती है। आचार्य विष्णुदत्त उपाध्याय, श्रीधाम बृन्दावन ने बसेरा शिविर सेक्टर 10 नारायण प्रभु मार्ग ब्लाक ए 75 में सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा प्रारम्भ में श्रीमद्भागवत माहात्म्य बताते हुए संदेश दिया। माहात्म्य के प्रारम्भ प्रारम्भ में धुंधकारी तथा गोकर्ण की कथा सुनाई।आचार्य ने बताया कि धुंधकारी की प्रेत योनि से गोकर्ण द्वारा श्रीमद्भागवत कथा सुनने मात्र से प्रेत योनि से मुक्त होकर स्वर्गलोक को गया। श्रीमद्भागवत कथा प्रेम से श्रवण करने मात्र से समस्त पाप मिट जाते है। सहायक जापकर्ता पुजारी कामेश्वर मिश्र ने श्रीमद्भागवत की स्थापना, बाल श्री कृष्ण की प्राण प्रतिष्ठा पूजन कार्य सम्पन्न कराया। श्रीमद्भागवत कथा में संगीत गौरव, अमन, जय तथा शिवम ने दिया। श्रीमद्भागवत कथा के यजमान देवेन्द कुमार शर्मा ने बताया कि श्रीमद्भागवत का समापन 25 जनवरी को होगा, तथा भण्डारा 26 जनवरी को होगा। श्रीमद्भागवत कथा के देवेन्द्र कुमार शर्मा, राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव सपत्नी, धनंजयानन्द सपत्नी यजमान है।

विहिप के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष व मोरारी बापू ने पुरी शंकराचार्य से भेंट कर लिया आशीर्वाद

महाकुंभनगर। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार व प्रसिद्ध कथावाचक मोरारी बापू ने शंकराचार्य गोवर्धन मठ पुरी स्वामी निश्चलानंद सरस्वती के दर्शन कर उनसे आशीर्वाद लिया। महाकुंभ क्षेत्र के सेक्टर 19 संगम लोअर मार्ग स्थित शंकराचार्य के शिविर पहुंचे वी एच पी के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष व मोरारी बापू ने शंकराचार्य से विभिन्न आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व हिंदू राष्ट्र अभियान को लेकर चर्चा की। शंकराचार्य ने मठ मंदिर को शिक्षा रक्षा का केंद्र बनाने और हर हिन्दू परिवार प्रतिदिन एक घंटा एक रुपया अपने समाज के लिए निकाले ऐसा अभियान चलाने का आह्वान किया। शंकराचार्य ने कहा कि हिंदू अपने आस पास की समस्याओं को आपस में सुलझाएं ऐसी जागरूकता समाज में फैलनी चाहिए। इस दौरान शंकराचार्य के निजी सचिव स्वामी निर्विकल्पानंद सरस्वती, आचार्य विवेक मिश्र वृंदावन, प्रफुल्ल चैतन्य ब्रम्हचारी, हृषिकेश ब्रम्हचारी, राजेश चैतन्य ब्रम्हचारी, सहित शिष्यगण उपस्थित रहे।

चोरी के सामान व स्कार्पियो गाड़ी के साथ पुलिस व एसओजी के हत्थे चढ़े दो चोर

नैनी। नैनी थाना औद्योगिक क्षेत्र व एसओजी यमुनानगर जोन की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा दो नफर वांछित अभियुक्त गिरफ्तार किए गए। उक्त अभियुक्तगणों के कब्जे से 11 बोरी में चोरी की पीसीबी स्क्रैप वजन लगभग 280 किलोग्राम व घटना में प्रयुक्त स्कार्पियो गाड़ी बरामद किया गया। बता दें कि सोमवार को औद्योगिक क्षेत्र थाने के दरोगा अनुज राय, दरोगा हरिओम सिंह, दरोगा अफजल सिद्दीकी, दरोगा अमित कुमार गुप्ता व एसओजी प्रभारी यमुनानगर उपनिरीक्षक नवीन कुमार सिंह मय एसओजी टीम के साथ दो वांछित आअभियुक्तगण दीपक बिन्द उर्फ प्रधान पुत्र राम किशुन निवासी ग्राम बेलवट थाना औद्योगिक क्षेत्र व मोहम्मद अशफाक उर्फ अज्जु पुत्र सैय्यद हसन निवासी 128अ दरियाबाद थाना अतरसुइया को मुखबिर की सूचना पर आईटीआई अभियुक्तगणों के कब्जे से आईटीआई कम्पनी से चोरी गये पीसीबी। स्क्रैप वजन लगभग 280 किलोग्राम व घटना में प्रयुक्त महेन्द्रा स्कार्पियों गाड़ी को बरामद किया गया। जांच पड़ताल में वाहन महेन्द्रा स्कार्पियों का कागजात पेश नहीं करने पर धारा 207 एमवीएक्ट की कार्यवाही अलग से की गयी। पुलिस व एसओजी के छद्वारा बताया गया कि आवेदक राजेश प्रसाद राय पुत्र स्व. रमाशंकर निवासी सी 61 आफिसर्स कालोनी आईटीआई नैनी औद्योगिक क्षेत्र द्वारा तहरीर दी गयी कि 18 जनवरी रविवार की रात के समय लगभग 1 बजे आईटीआई के परिसर से कुछ पीसीबी अज्ञात व्यक्तियों द्वारा चोरी कर ली गयी है। जिसके आधार पर अज्ञात चोर पंजीकृत हुआ था। बताया गया कि गिरफ्तार अभियुक्तगण शातिर किस्म के अपराधी हैं। जो जनपद एवं वाह्य जनपदों में घटनाएं कारित किया करते हैं। जिनके विरुद्ध जनपद एवं वाह्य जनपद के विभिन्न थानों में अभियोग पंजीकृत है।

मोक्षदायनी पंडाल में भजन व ध्यान संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया

महाकुंम्भ नगर। गंगा समग्र के कुंभ मेला शिविर के मोक्षदायनी पंडाल में भजन व ध्यान संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायिका आद्या शर्मा, पूनम यादव, आराध्या राठौर एवं अविका ने यह कल कल छल- छल करती क्या कहती गंगा धारा गंगागीत से कार्यक्रम की शुरूआत की। जानी मानी पार्श्व गायिका कविता निगम, संजय वार्ष्णेय ने गंगा तेरा पानी निर्मल भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लिया। सिद्धार्थ कुमार ने बांसुरी के माध्यम से अपनी सुंदर भजन प्रस्तुति दी। ध्यानयोग एवं ज्योतिषाचार्य वैशाली जैन ने ध्यान मुद्रा के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को ध्यान की महत्ता बताई। भजन संध्या एवं ध्यान की शुरूआत राकेश मिश्रा, प्रांत संयोजक, आलोक शर्मा प्रांत वृक्षारोपण प्रमुख ने राष्ट्रीय संगठन मंत्री रामाशीष, संरक्षक काशी प्रांत स्वामी हरिनारायण, प्रांत संगठन मंत्री संजय एवं वैशाली जैन को अंग वस्त्रम व पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन आलोक शर्मा ने किया। भजन संध्या के उपरांत सम्मानित मंच द्वारा भजन गायक कलाकारों को सम्मानित किया गया। भजन गायन व ध्यान संध्या के इस कार्यक्रम में नीलम, दिव्या ओझा, डॉ रश्मि सिंह,अजय सिंह, विजय राज, अवध नारायण, राम शिरोमणि, प्रवीन शुक्ला, शैलेश, ज्ञानजी, श्रीनारायण, डॉ श्रवण मिश्रा, टी एन शुक्ला, इंद्रमणि पांडे,प्रज्ञा शर्मा, डॉ सपना सिंह, अजय दिवेदी आदि की उपस्थिति रही।

महाकुंभ में अब तक 4560 श्रद्धालुओं ने लिया चिकित्सकीय लाभ

महाकुम्भनगर। महाकुम्भ मेला क्षेत्र में सत्गुरु, ब्रम्हज्ञान देकर इस परमपिता परमात्मा से जोड़ देता है और मनुष्य को चौरासी लाख योनियों में बार बार जन्म लेने, बार-बार मरने के दुष्चक्र से मुक्त कर देता है और उसे कतार्भाव से भी मुक्त कर देता है जिससे वह कर्मों के जाल में न फसे । उक्त उद्?गार दिल्ली से आयी हुई निरंकारी संत डा० प्रवीण खुल्लर (सचिव, संत निरंकारी मंडल- दिल्ली) ने महाकुम्भ मेला क्षेत्र, सेक्टर-16, तुलसी मार्ग, पश्चिमी पटरी स्थित संत निरंकारी मिशन की शिविर में साध संगत को सम्बोधित करते हुवे व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि परमात्मा अखण्ड है, अनन्त है, शाश्वत है, अविनाशी है, सर्वव्यापक है, अजर है, अमर और स्वयंभू है। यह पारब्रम्हा परमात्मा दिव्य, अलौकिक आदि शक्ति है जिसका कोई अन्त कोई पारावार नहीं है। इसी दिव्य अलौकिक शक्ति का अंश हर जीव, प्राणी, प्रकृति में समाहित है। यह सबमें समान रूप से व्यापक होते हुवे भी सबसे अलग, स्वयं समर्थ और हर प्रकार से परिपूर्ण है। जोनल इंचार्ज अशोक कुमार सचदेव ने आये हुवे अतिथियों एवं श्रद्धालुओ का स्वागत एवं आभार प्रकट किया और बताया कि महाकुम्भ मेला क्षेत्र में संत निरंकारी मिशन द्वारा निः शुल्क डिस्पेंसरी शिविर पिछले 10 जनवरी से ही प्रारम्भ हो गई है जोकि आगामी 4 फरवरी तक, पूरे 26 दिनों तक स्थापित रहेगी। इस दौरान, महाकुम्भ में आये हुवे स्थानार्थियो, श्रद्धालुओं का निःशुल्क प्राथमिक उपचार एवं दवा वितरण किया जा रहा है। अब तक 4560 श्रद्धालुओं का प्राथमिक उपचार एवं दवा वितरण किया जा चुका है। इस शिविर में जहाँ 24 घण्टे मरीजों का निःशुल्क प्राथमिक उपचार एवं दवाएं दी जा रही हैं वहीं पूरें 26 दिनों तक सुबह 10 बजे से 11:30 बजे तक, दोपहर 12:30 से 2:00 बजे तक और शायं 3:30 बजे से 5 बजे तक केन्द्रीय प्रचारक संतो के पावन सानिध्य में आध्यात्मिक सत्संग का भी आयोजन किया गया है।

श्रद्धालुओं को ठंड से बचाने के लिए की गई विशेष व्यवस्था

महाकुम्भ में अलाव के लिए ऑनलाइन उपलब्ध होंगी लकड़ी, 16 डिपो बनाए गए, नेट पर फायरवुड डिपो प्रयागराज टाइप करके खोज सकेंगे

श्रद्धालुओं के लिए डिजिटल माध्यम से अलाव की लकड़ी का ऑनलाइन इंतजाम

महाकुम्भनगर। महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं को ठंड से बचाने के लिए योगी सरकार ने ऑनलाइन इंतजाम भी किया है। महाकुम्भ में देश विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की दिक्कत न आने पाए इसके लिए उत्तर प्रदेश वन निगम ने अलाव की लकड़ी की व्यवस्था को भी ऑनलाइन कर दिया है। अब सभी लकड़ी डिपो को गूगल लोकेशन के जरिए आसानी से ढूंढा जा सकता है। फायरवुड डिपो प्रयागराज टाइप करके इन डिपो का स्थान सर्च किया जा सकता है।

श्रद्धालुओं को मिलेगी सुविधा : डीएसएम प्रयागराज आरके चांदना ने बताया कि इसके लिए 16 डिपो स्थापित किए गए हैं। लकड़ी की कीमत 600 रुपये प्रति क्विंटल रहेगी। महाकुम्भ के दौरान बढ़ती हुई भीड़ और लकड़ी की आपूर्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह कदम उठाया गया है।

मोबाइल की नेविगेशन से भी निकटतम डिपो तक आसानी से पहुंच सकेंगे : महाकुम्भ क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में अलाव की लकड़ी के लिए कुल 16 डिपो बनाए गए हैं। इनमें से कुछ प्रमुख डिपो सेक्टर 16 में स्थित हैं। यहां पर उत्तर प्रदेश वन निगम उचित मूल्य पर लकड़ी उपलब्ध करा रहा है। इन डिपो का स्थान इंटरनेट पर फायरवुड डिपो कीवर्ड के माध्यम से खोजा जा सकता है।

27,000 क्विंटल लकड़ी आपूर्ति का इंतजाम : उत्तर प्रदेश वन निगम के अनुसार, महाकुम्भ के दौरान लगभग 27,000 क्विंटल लकड़ी की आपूर्ति की तैयारी है। इसके लिए उत्तर प्रदेश के विभिन्न डिपो से लकड़ी भेजी जाएगी। तीर्थयात्रियों को यह लकड़ी निर्धारित दर पर उपलब्ध होगी।

महर्षि विद्या मन्दिर नैनी के छात्रों की मनमोहक प्रस्तुति

विद्यालय की प्रधानाचार्या पूजा चंदोला के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ

नैनी। नैनी अरैल संगम स्थित महर्षि वेद विद्या पीठम में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में महर्षि विद्या मन्दिर, दूरवाणी नगर एडीए कॉलोनी नैनी के छात्र छात्राओं का सांस्कृतिक प्रदर्शन अत्यंत मनमोहक रहा। महर्षि विद्या मन्दिर विद्यालय समूह के अध्यक्ष ब्रह्मचारी डॉ गिरीश चन्द्र वर्मा के दिशा निर्देशन में महाकुंभ मेला 2025 की भव्यता में निखार लाने हेतु महर्षि वेद विद्या पीठम में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है, जिसमे भारत के भिन्न- भिन्न महर्षि विद्या मन्दिर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है। आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के इस अवसर पर महर्षि विद्या मन्दिर नैनी के छात्र- छात्राओं ने प्रतिभाग किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या पूजा चंदोला के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओ द्वारा तैयार कराया गया। महर्षि वेद विद्या पीठम के भव्य मण्डपम में विद्यालय के छात्र छात्राओं का सांस्कृतिक प्रदर्शन बहुत ही सुन्दर रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश भजन से हुआ। कार्यक्रम की अगली कड़ी में सूर्यवंदना नृत्य, राधाकृष्ण भजन नृत्य, शिवस्तुति, तथा विघ्नहर्ता गणेश विषय पर एक लघु नाटिका का प्रदर्शन छात्र- छात्राओं द्वारा किया गया। लघु नाटिका के चयनित सभी पात्रो ने अपने अपने स्वांग का प्रदर्शन वास्तविक एवं मनोहर ढंग से किया। इस शुभ अवसर पर आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मण्डपम में राष्ट्रीय निदेशक मण्डल, विद्वज्जन विद्यालय के सभी शिक्षक गण उपस्थित रहे। सभी लोगो ने बच्चो द्वारा कलात्मक प्रदर्शन का खूब सराहना किए। सराहनीय एवं सुगठित वाकशैली के साथ मंच संचालन कर रही कक्षा ग्यारवी की छात्रा अंजली मिश्रा ने अंत में कार्यक्रम के वास्तविक सार एवं महाकुंभ मण्डपम की खूबियों को बताते हुए अपनी वाणी को विराम दिया और कार्यक्रम का समापन किया।

महाकुम्भ मेला क्षेत्र में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने चलाया चेकिंग अभियान

महाकुम्भनगर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महाकुम्भ राजेश द्विवेदी के द्वारा मेला क्षेत्र में निरंतर बढ़ रही भीड़ को दृष्टिगत रखते हुए सोमवार को तिकोनिया तिराहा पर मेला क्षेत्र में जाने वाले प्रत्येक वाहनों की चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मौके पर ही वाहन स्वामियों से वार्ता की गई एवं अनुरोध किया गया कि अति आवश्यक होने पर ही मेला क्षेत्र में अपने वाहनों को लेकर जाएं व मेला क्षेत्र के यातायात व्यवस्था को सुचारू रूप से चलने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। चेकिंग के दौरान अन्य अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

आवश्यकता है

प्रतिभा उच्च शिक्षा संस्थान

सम्बद्ध प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भइया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
निम्न पद हेतु सहायक आचार्य की आवश्यकता है-

स्नातक स्तर कला संकाय
संस्कृत -01 पद

वेतन यूजीसी के मानकानुसार
विज्ञापन प्रकाशन के 10 दिनों के अंदर आवेदन पत्र महाविद्यालय में जमा करें।

प्रबन्धक/सचिव
प्रतिभा उच्च शिक्षा संस्थान
फूलपुर उर्फ शेखपुर प्रयागराज
मो.नं. 8707046593, 9452145821
ई-मेल pratibhaucchsiksha@gmail.com

सम्पूर्ण समाधान दिवस लालगंज में डीएम व एसपी ने सुनी शिकायतें

शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण किया जाये-जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी की अध्यक्षता में तहसील लालगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। लालगंज तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 373 फरियादी अपनी समस्याओं के निस्तारण हेतु उपस्थित हुये जिनमें से राजस्व विभाग की 07 व पुलिस विभाग की 03 शिकायतें इस प्रकृति की पायी गयी जिनका मौके पर निस्तारण कर दिया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल प्राप्त 373 शिकायतों में से 177 शिकायतें राजस्व विभाग से, पुलिस विभाग से 40, विकास विभाग से 22, विद्युत विभाग से 31, आपूर्ति विभाग से 06, समाज कल्याण विभाग से 03, बेसिक शिक्षा से 01 एवं 93 अन्य विभागों से सम्बन्धित शिकायते प्राप्त हुई। पुलिस विभाग से सम्बन्धित शिकायतों को पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार एवं विकास विभाग से सम्बन्धित शिकायतों को मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा द्वारा सुनी गयी।

शिकायतकर्ता शारदा प्रसाद मिश्र, पवन कुमार मिश्र, सौरभ मिश्र, जगदम्बा प्रसाद निवासी थरिया ने शिकायत किया कि प्रार्थी की भूमिधरी जमीन गाटा संख्या 365 मिलजुमला है जिसके बगल में पूर्व दिशा की ओर नवीन परती गाटा संख्या 449 व 448 स्थित है जिस पर पूर्व प्रधान पति बृजेश कुमार मिश्र ने अवैध रूप से मकान बनाकर निवास कर रहे है, नवीन परती के साथ हमारी जमीन पर भी जबरन कब्जा करते चले आ रहे है, रोकने पर मारपीट करने लगते है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी लालगंज को निर्देशित किया कि आरआई व लेखपाल को भेजकर मौके पर अभिलेखीय परीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही करें। इसी प्रकार जिलाधिकारी ने जन शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर उसका निस्तारण सम्बन्धित अधिकारियों को ससमय गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की मंशा अनुरूप शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से ससमय किया जाये। उन्होने निर्देशित करते हुये कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये जमीनी विवादों के शिकायतों को राजस्व और पुलिस टीम द्वारा मौके पर जाकर बिना किसी पक्षपात के उन शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये। कोई भी गरीब व्यक्ति किसी कल्याणकारी योजनाओं से वंचित न रहने पाये, इसका विशेष ध्यान दिया जाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी ने ईओ लालगंज को निर्देशित किया कि तहसील परिसर व नगर पंचायत लालगंज क्षेत्र में मच्छरों से बचाव हेतु तत्काल फागिंग करायी जाये और सायंकाल तक फागिंग की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाये। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी लालगंज नैन्सी सिंह, जिला विकास अधिकारी कृष्ण कुमार, परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव, तहसीलदार सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

मंहगाई तथा आम आदमी की सुरक्षा में भाजपा सरकार है विफल-सपा सांसद

अखंड भारत संदेश

लालगंज। समाजवादी पार्टी के सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने सोमवार को रामपुरखास के एक दिवसीय दौरे पर जनसमस्याओं की सुनवाई की। उन्होनें लालगंज तथा रानीगंज कैथौला में पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात भी किया। जिले के सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने स्थानीय लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण गृह में जनसमस्याओं की सुनवाई की। उन्होनें यहां शिकायतकर्ताओं की समस्या की सुनवाई करते हुए इनके शीघ्र निस्तारण कराए जाने की बात कही। निरीक्षण गृह में उन्होने पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से भी मुलाकात की। सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वह भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ मुखर अभियान में तेजी लायें। उन्होनें कहा कि केंद्र व राज्य की भाजपा सरकार मंहगाई तथा आम आदमी की सुरक्षा के क्षेत्र में पूरी तरह विफल है। इसके बाद सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने रानीगंज कैथौला बाजार में भी व्यापारियों तथा कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। इस मौके पर जिपंस राम सुंदर पटेल, प्रतिनिधि बीएल वर्मा, टीपी यादव, रामधन यादव, वीरू सरोज, भइयाराम पटेल, जितेन्द्र पटेल, जितेन्द्र सिंह, प्रकाशचंद्र उपाध्याय, रोशन लाल सरोज, सोनू पासी, राजू यादव, राजेश यादव, अभिषेक यादव आदि मौजूद रहे।

सतचण्डी महायज्ञ में उमड़े श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

लालगंज। लक्ष्मणपुर क्षेत्र के सिंधौर गांव के डण्डीपुरम मे सात दिवसीय सतचण्डी महायज्ञ में सोमवार को श्रद्धालुओं को भावविभोर देखा गया। देवी मां की आराधना के साथ हुई आरती में श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी दिखी। आचार्य पवन मिश्र ने श्रद्धालुओं को बताया कि जहां पर यज्ञ हुआ करता है वहां की वायु शुद्ध हो जाया करती है। उन्होनें कहा कि यज्ञ के अनुष्ठान में बुद्धि और बल का पराक्रम बढ़ता है। संयोजक उदयराज वर्मा व छेदीलाल वर्मा ने वेदीपूजन किया। इस मौके पर कलू वर्मा, राजेश वर्मा, सुभाष वर्मा, कौशलेश विश्वकर्मा, महीप सिंह, शिवशंकर तिवारी, धर्मेन्द्र गिरि आदि रहे।

मवेशी के हमले में वृद्ध घायल, रेफर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मवेशी के हमले में वृद्ध गंभीर रूप से चुटहिल हो गया। सांगीपुर थाना के रीठी कोठा नेवढ़िया निवासी तुलसीराम वर्मा 65 पुत्र रामधनी सोमवार की सुबह करीब साढ़े नौ बजे घर से गेहूं के खेत से नीलगाय भगाने गये थे। इसी बीच नीलगाय के झुण्ड ने वृद्ध पर हमला बोल दिया। हमले मे तुलसीराम गंभीर रूप से घायल हो गये। परिजन इलाज के लिए सांगीपुर सीएचसी ले गये। प्रारंभिक उपचार के बाद गंभीर दशा में उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

डेरवा टीम को मिला विजेता कप

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। लक्ष्मणपुर ब्लाक के हरिहरपुर कैलहा में क्रिकेट टूर्नामेण्ट के फाइनल में आरके स्पोर्टिंग क्लब डेरवा की टीम को विजेता कप हासिल हुआ। वहीं उप विजेता फूलपुर टीम रही। क्षेत्र पंचायत सदस्य रहीश ने विजेता टीम को पुरस्कृत किया। इस मौके पर खालिद, राधेश्याम वर्मा, प्रदीप वर्मा, अखिलेश, महेन्द्र वर्मा आदि रहे।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों के साथ परिचयात्मक बैठक कर दिये आवश्यक निर्देश

सभी अधिकारीगण समय से अपने कार्यालय में अवश्य पहुॅचे-जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने कैम्प कार्यालय के सभागार में जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक कर अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। बैठक में जिलाधिकारी ने प्रशासनिक व्यवस्था कैसे सुचारू रूप से संचालित हो सके इसके लिये जनपद स्तरीय अधिकारियों को कार्यालय के कायी से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर आवश्यक दिशा निर्देश दिये और कहा कि दिये गये निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन स्वयं व कर्मचारियों से कराया जाये। सभी अधिकारी व उनके अधीनस्थ कर्मचारी अपने पास डायरी अवश्य रखें, महत्वपूर्ण कायी को उसमें अंकित करें जिससे महत्वपूर्ण कायी की जानकारी रहे। सभी अधिकारीगण समय से अपने कार्यालय में अवश्य पहुॅचे, कार्यालयों को साफ-सुथरा रखें। अभिलेखोंध्पत्रावलियों का रख-रखाव सुव्यवस्थित व सुसज्जित ढंग से रखें। जनसुनवाई समय से करें और शिकायती प्रार्थना पत्रों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण व ससमय कराना सुनिश्चित करें, यदि किसी भी प्रकार की समस्या आ रही है तो अवगत करायें। कोई भी शिकायतकर्ता यदि अपनी शिकायत लेकर आता है तो उसकी शिकायत का निस्तारण अवश्य करें, जिले के सभी महत्वपूर्ण अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों व सम्भ्रान्त नागरिकों के फोन नम्बर अपने मोबाईल में सेव करें। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि यदि कोई अधिकारी अवकाश पर जाता है तो बगैर अनुमति के मुख्यालय न छोड़े और यदि किसी परिस्थिति में अवकाश पर जाना है तो फोन पर वार्ता कर ही मुख्यालय छोड़े। सभी अधिकारीगण माह में एक बार अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की समस्या के सम्बन्ध में बैठक अवश्य करें और उनकी समस्याओं का निराकरण करायें। शासन के विकास प्राथमिकता वाले कायों व अच्छे कायों की स्टोरी सम्बन्धित अधिकारीगण प्रकाशितध्प्रचारित करायें। शासन स्तर से जो भी पत्र आये जिलाधिकारी के संज्ञान में अवश्य लाये। इसी प्रकार जिलाधिकारी ने कार्यालय के कायों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक अधिकारियों को जानकारी दी और कहा कि जो भी दिशा निर्देश दिये गये इसका समस्त अधिकारीगण शत् प्रतिशत अनुपालन करें, सभी अपने कायों एवं दायित्वों का भलि भांति निर्वहन करें। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा, अपर जिलाधिकारी(वि0ध्रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, मुख्य राजस्व अधिकारी अजय तिवारी व जिला स्तरीय अधिकारी, उप जिलाधिकारीगण उपस्थित रहे।

शिक्षक पर छात्रा से अश्लील हरकत करने का आरोप, शिकायत

अखंड भारत संदेश

पट्टी। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के शेषपुर अठगवा गांव की एक महिला ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसकी पुत्री जिसकी उम्र 11 वर्ष है वह गांव के एक विद्यालय में कक्षा 6 में पढ़ती है। तीन दिन पूर्व वह स्कूल गई थी। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाध्यापक उसे अपने पास बुलाया और जबरन उसके साथ अश्लील हरकत शुरु कर दी। विरोध करने पर उसे जान से मारने और तेजाब से चेहरा जलकर बर्बाद कर देने की भी धमकी दी। जिससे डरी सहमी छात्रा घर पहुंची और स्कूल जाना ही बंद कर दिया। छात्रा से परेशानी का कारण जब घर वालों ने पूछा तो वह रोते हुए आप बीती बताइ। पीड़ित छात्रा की मां सोमवार को 5 बजे पट्टी कोतवाली पहुंचकर आरोपी शिक्षक के विरुद्ध प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

अनाथ निराश्रित बच्चों की मदद करना पुण्य कार्य- सुमित पवार

बालगृह शिशु में भेंट किया वस्त्र ,खेलकूद व पठन-पाठन की सामग्री

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद न्यायाधीश अब्दुल शाहिद के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व अपर जिला जज सुमित पवार ने सोमवार को बाबा राम उदित सेवा संस्थान द्वारा शुकुलपुर में संचालित बाल गृह शिशु का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान शिशु गृह में रखें गये बच्चों को देखा और उनके स्वास्थ्य के विषय में जानकारी प्राप्त किया।इस मौके पर विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव अपर जिला जज सुमित पवार ने अधीक्षक को निर्देशित किया कि बालगृह शिशु में रखें गये बच्चों की साफ सफाई एवं उनके खाने पीने तथा स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाय।इस दौरान मुमकिन है डेवलपमेंट फाउण्डेशन व सार्थक फाउण्डेशन भारत के सहयोग से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अपर जिला जज सुमित पवार व शिक्षक हेमंत कुमार की मौजूदगी में सार्थक फाउण्डेशन के ट्रस्टी व भारतीय भाषा अभियान के जिला संयोजक महेश कुमार गुप्ता ने बालगृह शिशु आश्रम में रह रहें बच्चों को ठंड से बचाव हेतु कम्बल,पैंट-शर्ट,जूता-मोजा, टोपी, इनर, जैकेट व विभिन्न वस्त्रों के साथ पठन-पाठन एवं खेल के विविध समाग्री तथा आलमारी भेंट किया। इस दौरान वहां पर शिक्षक हेमंत कुमार द्वारा बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते उन्हें खेल-खेल में पढाई के गुर सिखाया।अधिवक्ता परिषद के महामंत्री शिवेश कुमार शुक्ल ने कहा कि अनाथ बच्चों की सेवा बड़ा पुनीत कार्य है। इस मौके पर भारतीय भाषा अभियान के जिला संयोजक महेश कुमार गुप्ता ने कहा कि निराश्रित व असहाय बच्चों जिनका कोई पालन हार नही है मानवीय संवेदना व सेवा भाव व निस्वार्थ भाव से हर सम्भव मदद का प्रयास करना चाहिए। इस मौके पर भारतीय भाषा अभियान के सहसंयोजक सतीश दूबे व परिषद के कोषाध्यक्ष भरत लाल,उपाध्यक्ष रवि सिंह, आश्रम के संचालक कमला कांत शुक्ल,ख्ना, स्मृति, केवला सहित आश्रम के अन्य लोग मौजूद रहे।

पूर्व मंत्री मोती सिंह ने किया पट्टी का चतुर्मुखी विकास-विनोद पाण्डेय

अखंड भारत संदेश

पट्टी। सोमवार को तहसील पट्टी क्षेत्र के सदहा में संचालित आईटीआई कॉलेज के वार्शिकोत्सव कार्यक्रम में जरूरतमंदों को कंबल वितरण किया गया। कंबल वितरण से पूर्व कॉलेज परिसर में रामचरितमानस पाठ का आयोजन हुआ। पूर्णाहुति और ब्रह्मभोज के दिन सोमवार को आईटीआई कॉलेज में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह के प्रतिनिधि विनोद पाण्डेय ने कहा कि गरीबों शोसितो और वंचितों पर सरकार की नजर है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में जन-जन तक पहुंच कर गरीबों की हर संभव मदद कर रहे हैं। पट्टी का चतुर्मुखी विकास पट्टी के सेवक पूर्व मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह ने सुनिश्चित किया है। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अभी लगभग 4 वर्षों तक पूर्व मंत्री के द्वारा प्रस्तावित किए गए कार्य धरातल पर होते नजर आएंगे। काली-काली सडके लखनऊ के हजरतगंज सड़क को फेल कर रही है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि की भूमिका में बाबा बेलखरनाथ धाम के ब्लॉक प्रमुख सुशील सिंह पट्टी नगर पंचायत के अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल मौजूद रहे। कार्यक्रम में विजय शंकर पाण्डेय, पंडित राम मूर्ति पाण्डेय, संतोष पाण्डेय,शिव शंकर पाण्डेय,श्याम शंकर पाण्डेय, कृष्ण शंकर पाण्डेय,भोला पाण्डेय,कृष्ण नारायण पाण्डेय पूर्व प्रधानाचार्य,राजेश दुबे,अमरेंद्र मिश्रा,अंबिकेश तिवारी,जगदीश प्रसाद पांडेय,प्रेम प्रकाश पांडेय,अखिलेश कुमार पांडेय, आदि मौजूद रहे।

बेटे व बहू से पीड़ित वृद्ध पहुंचा कोतवाली

अखंड भारत संदेश

पट्टी। बेटे व बहू से प्रताड़ित वृद्ध कोतवाली में गंभीर आरोपों की शिकायत की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बरहूपुर गांव निवासी राम अवध उर्फ हिरावन ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसका बेटा और बहू उसे मारते पीटते हैं। भोजन नहीं देते हैं, गालियां देते हैं, उसका जीना मुश्किल कर रखा है। वृद्ध सोमवार की शाम पट्टी पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

समस्याओं को लेकर वकीलों ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

लालगंज। साथियों की समस्याओं के समाधान न होने तथा पूर्ति निरीक्षक कार्यालय में अनियमितताओं समेत विभिन्न मांगों को लेकर अधिवक्ताओं ने सोमवार को डीएम को ज्ञापन सौंपा। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा महामंत्री सूर्यकांत निराला की अगुवाई में वकीलों ने डीएम को ज्ञापन सौंपकर उदयपुर थाना क्षेत्र के अधिवक्ता रामछबीले यादव तथा अंकुर त्रिपाठी पर प्राणघातक हमले में आरोपियों के खिलाफ कडी कार्रवाई की मांग उठाई। पूर्ति निरीक्षक कार्यालय के तहसील परिसर में आवंटित कक्ष में संचालन न होने पर वकीलों ने नाराजगी जतायी। रूरल बार एसोशिएसन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने सभागार के बगल जन शौचालय में गंदगी को लेकर डीएम से प्रशासनिक लापरवाही पर कार्रवाई की मांग की। डीएम शिवसहाय अवस्थी ने अधिवक्ताओं को बिंदुवार समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी कार्रवाई का भरोसा दिलाया। वहीं रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल व संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह की अगुवाई में वकीलों ने नये डीएम शिवसहाय अवस्थी व एसपी डॉ. अनिल कुमार को बुकें भेंटकर सम्मानित भी किया। इस मौके पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष विभाकर नाथ शुक्ल, उपाध्यक्ष बालेन्द्र त्रिपाठी, देवी प्रसाद मिश्र, मनोज शुक्ला, लाल अंकित सिंह, रामकुमार पाण्डेय, प्रमोद सिंह, अनिल शर्मा आदि अधिवक्ता रहे।

भगवान का जन्म धर्म के शंखनाद का उत्सव- पं. जगदीप तिवारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संगम चौराहे के समीप हो रही श्रीमदभागवत कथा में सोमवार को श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी दिखी। वृंदावन धाम से पधारे कथाव्यास पं. जगदीप तिवारी जी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म धर्म के शंखनाद का उत्सव है। उन्होने कहा कि भगवान ने जन्म के समय ही ऐसी लीला किया कि जगत में नीति और नैतिकता का प्रकाश फैल उठा। कथाव्यास पं. जगदीप तिवारी जी ने श्रद्धालुओं से कहा कि भगवान ज्ञान तथा वैराग्य और मोक्ष के साक्षात पथ प्रदर्शक हैं। ज्ञान और वैराग्य तथा जीवन की सम्पूर्णता का एक मात्र साधन सच्चे मन से हरे कृष्ण हरे राधे का निर्मल जाप है। उन्होनें कहा कि जीव को लोक सुधारने के लिए तो चिन्तित रहना ही चाहिए उसे अपने आचरण से परलोक में भी सदगति की प्राप्ति की कामना करनी चाहिए। कथा के दौरान भगवान के स्तुति भजनों को सुनकर श्रद्धालु मंत्रमुग्ध दिखे। कथा के संयोजक समाजसेवी जगदीश द्विवेदी व विमला देवी तथा देवीदयाल द्विवेदी ने व्यासपीठ का वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य पूजन अर्चन किया। सह संयोजक अधिवक्ता मुकेश द्विवेदी ने कथाव्यास का सारस्वत सम्मान किया। इस मौके पर रामलोचन त्रिपाठी, डॉ. रामसमुझ मिश्र अकेला, सुमित त्रिपाठी वत्सल, संतोष मिश्र, राजकुमार बरनवाल, नितेश द्विवेदी, हरिओम मिश्र, अर्चना त्रिपाठी, मीना, अभिषेक द्विवेदी, दिनेश सिंह, अनिल त्रिपाठी महेश आदि रहे।

ताला तोडकर विद्यालय से हजारों की चोरी

अखंड भारत संदेश

बेलखरनाथ धाम। प्राथमिक विद्यालय का ताला तोड़कर चोरों ने हजारों रुपए का सामान चुरा ले गए। प्रधानाध्यापक ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। कधंई थाना क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय कांप रामपुर में बीती रात अज्ञात चोरों ने स्टोर रूम का ताला तोड़ कर अंदर रखा दो गैस सिलेंडर, बर्तन ,व मिड-डे मील का रखा अनाज चुरा लिया।सोमवार सुबह प्रधानाध्यापक राजेश कुमार स्कूल पहुंचे तो स्टोर रूम का ताला टूटा हुआ था तथा सरकारी कागज भी गायब है।इस मामले में प्रधानाध्यापक ने कंधई पुलिस को अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।बता दें कि कधंई इलाके में प्रतिदिन चोरी की घटना से लोगों में दहशत का माहौल बना हुआ है।

संगम जा रही श्रद्धालुओं से भरी कार पलटी, पांच घायल

तेज रफ्तार कार के सामने गाय के आने से हुआ हादसा

अखंड भारत संदेश

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी। हिमाचल प्रदेश से प्रयागराज में महाकुंभ संगम स्नान करने के लिए जा रही तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पलट गई। जिससे कार में बैठे पांच लोग घायल हो गए है दुर्घटना देखकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना एंबुलेंस और पुलिस को दी गई है घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है बताया जाता है कि तेज रफ्तार कार के सामने अचानक गाय आ गयी जिससे चालक का संतुलन बिगड़ गया और दुर्घटना हुई है। जानकारी के मुताबिक हिमाचल प्रदेश के शिमला जनपद के बालू गेट थाना क्षेत्र के मलोक गांव से अर्जुन वर्मा उम्र 35 वर्ष पुत्र धर्मप्रकाश वर्मा अपनी मां ऊषा वर्मा उम्र 60 वर्ष पत्नी धर्मप्रकाश वर्मा, भाई बलवंत वर्मा उम्र 32 वर्ष पुत्र धर्म प्रकाश वर्मा व पड़ोसी एल डी वर्मा उम्र 89 वर्ष पुत्र लच्छी वर्मा व तारावती उम्र 65 वर्ष पत्नी सहज ठाकुर के साथ कार से रविवार को सुबह महाकुंभ संगम स्नान के लिए प्रयागराज को निकले थे। सोमवार को सुबह लगभग 11 बजे जैसे ही श्रद्धालुओं की कार कोखराज थाना क्षेत्र के केसौवापुर गांव के पास से गुजर रही थी कि हाइवे पर अचानक एक गाय आ गई जिसे बचाने के चक्कर में तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पलट गई। कार पलटने से कार में बैठे सभी श्रद्धालु घायल हो गए। दुर्घटना देखकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई सूचना मिलने पर शहजादपुर चौकी प्रभारी मनीष पाल हमराहियों के साथ तत्काल मौके पर पहुंचते हुए सभी घायलों को लाकर स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया। जहां पर सभी श्रद्धालुओं का इलाज कराया गया सभी श्रद्धालुओं को मामूली रूप से चोट आई है।

बधाई मांगने को लेकर किन्नरों के दो गुटों के बीच जमकर विवाद

कौशाम्बी। सराय अकील थाना क्षेत्र के कोटिया आरपी गेस्ट हाउस में शादी विवाह के कार्यक्रम में बधाई मांगने को लेकर किन्नरों के दो गुटों के बीच जमकर विवाद हुआ है विवाद मे दोनों पक्षो मे जमकर मार पीट हुई दोनों गुट में मारपीट के बाद मामला पुलिस थाने की चौखट पर पहुंचा जहां जमकर हंगामा हुआ है शादी विवाह में बधाई के नाम पर जबरिया वसूली होने लगी है। जानकारी के मुताबिक शादी विवाह में किन्नर गुट द्वारा बधाई के नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है देने वाले की समर्थ नहीं होती तब भी उस पर तमाम दबाव बनाकर रकम की वसूली होती है रकम कम देने वालों के साथ तमाम तरह की अभद्रता किन्नर गुट द्वारा की जाती है शादी समारोह मे बधाई मांगने को लेकर महंत मुस्कान और महामंडलेश्वर कल्याणी माँ के दोनों गुटों मे जमकर मार पीट हुई विवाद करने के बाद दोनों गुट सराय अकील थाने मे पहुचे किन्नरों ने थाने मे पहुंचकर जमकर हंगामा किया है बधाई की रकम वसूली को लेकर के दोनों गुट अपना-अपना क्षेत्र बता रहे हैं और इसी बात का विवाद है दोनों गुट के किन्नरों का कहना है कि दूसरे गुट के किन्नर उनके क्षेत्र में वसूली करते हैं जो गलत है।

समाधान दिवस मंझनपुर में डीएम एसपी ने जनशिकायतों को सुना

कौशाम्बी। जिले के सभी तहसीलों में सोमवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील मंझनपुर में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को तहसील दिवस एवं आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुए गुणवत्तापूर्ण/ समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी शिकायत लम्बित न होने पाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 39 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।समाधान दिवस में शिकायतकर्ता लल्लू जायसवाल निवासी ग्राम-अमरूपुर जाफरपुर महावा द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया गया कि सन्-1976 में पट्टा आवंटित हुआ था, जिसके कागजात अभी तक नहीं प्राप्त हुए है, जिस पर जिलाधिकारी ने तहसीलदार मंझनपुर को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। तहसील सिराथू में कुल 16 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 01 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील चायल में कुल 16 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 01 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव अपर सीएमओ डॉ. हिन्द प्रकाशमणि एवं उप जिलाधिकारी आकाश सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सत्ता की कुर्सी क्या क्या न कराए...

सैफई के पैसे से भाजपा जिलाध्यक्ष बनने की चाह में हो रही जोर आजमाइश

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जनपद के भाजपा जिलाध्यक्ष पद को लेकर लगातार ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है प्रत्याशी एड़ी से लेकर चोटी तक का जोर आजमाइश कर रहे है करें भी क्यों न सत्ता पक्ष के जिलाध्यक्ष का पावर ही ऐसा होता है जिसमें पैसे पावर रुतबा की बात की जाय तो किसी जनप्रतिनिधि से कई गुना ज्यादा होता है जिसे लेकर प्रत्याशी जिले से लेकर सूबे तक के नेताओं की चरण वंदना से लेकर परिक्रमा कर रहे हैं तो कुछ ऐसे भी प्रत्याशी हैं जो दूसरे दल के बड़े नेताओं से पावर सहित पैसे का इस्तेमाल करवाकर जिलाध्यक्ष पद हड़पने की फि राक में है। मालूम हो कि जनपद में इस पद के लिए कुल 24 प्रत्याशियों ने आवेदन किया है जिनमें से 11 सामान्य कटेगरी से है तो ओबीसी से 6 तो वहीं एस सी बिरादरी से 7 लोगों ने आवेदन किया है। लेकिन इन सब में एक ऐसा कद्दावर प्रत्याशी भी है जोकि भाजपा मंत्री का नजदीकी है अपने आपको जिलाध्यक्ष की रेस में उत्तीर्ण मान रहा है लेकिन वहीं सूत्रों की माने तो वह ऐसे ही अपने आपको उत्तीर्ण नहीं मान रहा है बल्कि उसके पीछे भाजपा से लेकर सपा के बड़े नेता व सूबे के चाचा का वरदहस्त प्राप्त है।

सामान्य मीटर को स्मार्ट मीटर से बदलने का कार्य जल्द से जल्द पूर्ण किया जाय : सांसद

बैठक में सांसद ने कहा कि पुराने मीटरों के ओवर बिलिंग को संशोधित करते हुए उपभोक्ताओं को करें संतुष्ट

कौशाम्बी। सांसद पुष्पेन्द्र सरोज की अध्यक्षता में उदयन सभागार में जनपद स्तरीय विद्युत समिति की बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में संयोजक एवं अधीक्षण अभियंता द्वारा जनपद में विद्युत विभाग द्वारा चलाई जा रहीं योजनाओं रिवैम्प्ड, स्मार्ट मीटरिंग एवं बिजनेस प्लान के अन्तर्गत कराए जा रहें कार्यों की प्रगति से अवगत कराया गया। बैठक में सांसद ने कहा कि भविष्य में विद्युत आपूर्ति तथा विद्युत तंत्र से सम्बन्धित कार्यों के लिए जनप्रतिनिधियों को भी संज्ञानित कराते हुए उनके द्वारा प्रेषित प्रस्तावों को योजना में सम्मिलित किया जाय। उन्होंने जनपद में स्मार्ट मीटर स्थापित करने वाली कार्यदायी संस्था मेसर्स जी०एम०आर० को निर्देशित किया कि जनपद में सामान्य मीटर को स्मार्ट मीटर से बदलने का कार्य जल्द से जल्द पूर्ण किया जाय, इसमे किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाय। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि उपभोक्ताओं को सही विद्युत बीजक ही उपलब्ध करायें एवं त्रुटिपूर्ण बीजकों को ससमय संशोधित करते हुए उपभोक्ताओं को उपलब्ध करायें। उन्हांने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि विद्युत सम्बन्धी समस्याओं के निस्तारण के सम्बन्ध में जनता एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा किये जाने वाले फोन कॉल को रिसीव करें एवं उनकी समस्याओं का निस्तारण अवश्य करायें। उन्होंने कहा कि पुराने मीटरों के ओवर बिलिंग को संशोधित करते हुए उपभोक्ताओं को संतुष्ट करें। सांसद ने कहा जिन स्थानों पर बांस-बल्ली के माध्यम से विद्युत आपूर्ति की जा रहीं है, उन्हें चिन्हित करते हुए एडीबी द्वारा रिकण्डक्टरिंग योजना के अन्तर्गत कार्य को जल्द से जल्द पूर्ण करायें। बैठक में अधिशासी अभियंता, विद्युत द्वारा बताया गया कि वर्तमान में जनपद स्तर पर समस्त मीटरों के स्थान पर स्मार्ट मीटर प्रतिस्थापित किये जाने का कार्य कराया जा रहा है। दिसम्बर 2024 के कुल उपभोक्ताओं 253730 के सापेक्ष 18610 उपभोक्ताओं का मीटर बदलकर स्मार्ट मीटरों को प्रतिस्थापित किया जा चुका है। जिसके पूर्ण होने पर शत-प्रतिशत त्रृटिविहीन विद्युत बिल समस्त विद्युत उपभोक्ताओं को उनके मोबाइल/ ई-मेल के माध्यम से उपलब्ध कराया जायेंगा। उन्होंने बताया कि आम-जनमानस को निर्धारित रोस्टर के अनुसार विद्युत आपूर्ति की जा रहीं है।बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, एडीएम अरूण कुमार, विद्युत विभाग के समस्त अधिशासी अभियन्ता, उपखण्ड अधिकारी तथा अवर अभियन्ता उपस्थित रहे।

नगर पालिका मंझनपुर ने किया 1365 ऊनी कम्बल का वितरण

कम्बल पाकर गरीब कमजोर मजलूम निराश्रित लोगों के खिले चेहरे

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर निकाय के 25 वार्डो में सोमवार को शीत लहर एवं ठंड से बचाव हेतु निराश्रित एवं असहाय, वृद्धा, विधवा, दिव्यांग महिला पुरूष नागरिकों को ऊनी कम्बल वितरण करने हेतु वार्डवार मोहल्लो में कैम्प चौपाल लगाकर गरीब कमजोर मजलूम निराश्रित पात्र लाभार्थियों को चयनित कराते हुए अध्यक्ष की अध्यक्षता में तथा भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य की उपस्थिति में कंबल का वितरण किया गया है(वार्ड नम्बर-19, रत्नावली पुरम (बंधवा रजबर, बभनपुरा, इटैला) व वार्ड नम्बर-03, चौधरी बैजनाथ नगर (नेता नगर, नेहरू नगर) व वार्ड नम्बर-05, सरदार पटेल नगर (चक नगर प्रथम, बरईन का पुरा) व वार्ड नम्बर-06, डा0 हेडगेवार नगर (नया नगर प्रथम, तन्ना पर) व वार्ड नम्बर-16, चन्द्र गुप्त मौर्य नगर (भेलखा) व वार्ड नम्बर-17, गौतम बुद्ध नगर (महुवा खाड़ा, खोरा, नन्हुवा का पुरवा, भेलखा पश्चिम) में नागरिक को धर्मराज मौर्य जिला अध्यक्ष वा अध्यक्ष बीरेन्द्र कुमार फौजी महेश लोधी मण्डल अध्यक्ष, ओमकार पटेल अवर अभियन्ता संजय कुमार गुप्ता (लिपिक), रामयश लोधी, हरिशचन्द्र पाल, राजू सिंह, निरंजन चौधरी, अजय कुमार, नत्थू लाल, सभासद तथा भारत गौतम, मान सिंह, आर्यवीर, दुर्गा प्रसाद सभासद प्रतिनिधि, तथा निकाय के अन्य कर्मचारी की उपस्थित में कम्बल का वितरण हुआ इस शीत लहर में निराश्रित एवं असहाय नागरिक को आज कुल 1365 ऊनी कम्बल जैसे ही प्राप्त हुआ उनके चेहरे पर मुस्कान खुशी के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ व उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य तथा नगर विकास मंत्री ए0के0 शर्मा एवं नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष बीरेन्द्र कुमार फौजी का जय जयकार गुणगान सभी लाभान्वित नागरिक के द्वारा किया गया है। गौर तलब है कि दिनांक 20.01.2025 को मुख्यमंत्री व नगर विकास विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ व जिलाधिकारी, कौशाम्बी के आदेश के क्रम में तथा नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष बीरेन्द्र कुमार फौजी के अथक प्रयास से गरीब कमजोर मजबूर निराश्रित लोगों को कंबल का वितरण किया गया है।

विधवा महिला के साथ दबंगों ने की मारपीट

गंभीर हालत में जिला अस्पताल में महिला भर्ती,पुलिस पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप, एसपी से की शिकायत

कौशाम्बी। जिले में दबंगो ने घर में खाना बना रही विधवा महिला से गाली गलौच और मारपीट की है,महिला के सिर और पैर में गंभीर चोट आई है,पीड़ित महिला की सूचना पर पहुंची डायल 112 पुलिस ने एंबुलेंस से महिला को अस्पताल भेजा,जहा से उसे जिला अस्पताल के लिए डॉक्टर ने रेफर कर दिया,जहा महिला का इलाज चल रहा है।आरोप है कि पीड़ित महिला की सुनवाई थाना पुलिस ने नहीं की,जिसके बाद पीडिया की पुत्री ने एसपी से मिलकर मदद और न्याय की गुहार लगाई है। चरवा थाना क्षेत्र के सिरियावां कला गांव की विधवा महिला आसमा बेगम पत्नी स्वर्गीय मुख्तार अहमद ने एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव को शिकायती पत्र देते हुए। बताया कि 18 जनवरी की रात में वह घर पर खाना बना रही थी तभी घर के पड़ोस में महमूद उल मुन्ने,नगीना पत्नी ननका, नकसीना पत्नी महबूब,हसीना पत्नी ननकू ने मिलकर गाली गलौच और मारपीट की है,विरोध करने पर जमील पुत्र नन्हे और अकबनू निशा पत्नी नन्हे ने उसके सिर और पेट पर वार कर दिया जिससे उसे गंभीर चोट आई है,पीड़िता ने डायल 112 को इसकी सूचना दी,जिसके बाद पुलिस ने उसे घायल अवस्था में एंबुलेंस से मूरतगंज पीएचसी अस्पताल भेजा,जहा से डॉक्टर ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया,जहा वह पिछले तीन दिनों से उसका इलाज चल रहा है।पीड़िता का आरोप है कि घटना की सूचना दिए जाने के बावजूद पुलिस ने उसकी कोई मदद नहीं की और न ही कोई कार्रवाई की,पीड़ित की पुत्री ने एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव से मिलकर अपनी व्यथा सुनाई है,एसपी में जांच कर करवाई का आश्वासन दिया है।

न्यूज झरोखा

योगी का आशीर्वाद लेकर लौटे अखंड भारत संदेश अखबार के पत्रकार

कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के बलहेपुर रेही गांव में कंबल वितरण कार्यक्रम में अखंड भारत संदेश अखबार के संपादक योगी सत्यम पहुंचे जहां पर गरीब कमजोर मजलूम और निराश्रित लोगों को क्रिया योग अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष योगी सत्यम ने कंबल का वितरण किया संपादक योगी सत्यम के पहुंचने की जानकारी मिलते ही अखंड भारत संदेश समाचार पत्र कौशांबी के कई पत्रकार गणेश साहू राजकुमार मदन केसरवानी कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे और वहां उन्होंने योगी सत्यम का आशीर्वाद लिया।

शिक्षक की मौत पर शोक की लहर

कौशांबी एसएवी इंटर कालेज सैनी के शिक्षक राधा रमण बर्मा का सोमवार को स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल प्रयागराज में इलाज के दौरान मृत्यु हो गई वर्मा जी मकर संक्रांति के दिन महाकुंभ में संगम में स्नान करने गए थे स्नान के दौरान उन्हें मस्तिष्क आघात हो गया था जिस पर उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था इलाज के दौरान उनकी आसामाजिक मृत्यु की सूचना मिलने पर शोक की लहर व्याप्त हो गई दो दशक पूर्व राधा रमन वर्मा पत्रकारिता से भी जुड़े थे शिक्षक और पत्रकारों ने शोक संवेदना व्यक्त की है श्री वर्मा के निधन पर पत्रकार रामबदन भार्गव, मोहम्मद अली म, रमेश त्रिपाठी, अनुराग शुक्ला, कृष्णमणि मिश्रा, मोज्जम खान, नरेंद्र पांडे, रोहित तिवारी सच ज्ञानचंद द्विवेदी श्रवण पांडेय आदि पत्रकारों ने गहरा दुख व्यक्त किया है श्री राम बदन भार्गव ने कहा वर्मा जी अनुशासित शिक्षक और निर्भीक पत्रकार के रूप में हमेशा याद किए जाएंगे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

पत्रकार की माता के निधन पर शोक की लहर

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर के पत्रकार अजय कुमार की माता का सोमवार को इलाज के दौरान निधन हो गया है जैसे ही इस बात की जानकारी पत्रकारों को लगी शोक संवेदना व्यक्त करने वालों का तांता लग गया है उनका अंतिम संस्कार मंगलवार को होगा। प्रयागराज के रहने वाले दैनिक भास्कर के पत्रकार अजय कुमार की माता उम्र लगभग 70 वर्षलंबी बीमारी से जूझ रही थी इलाज के दौरान उनका निधन हो गया है माता जी ने सोमवार की दोपहर करीब दो बजे अंतिम सांस ली। ईश्वर पीड़ित परिवार को संबल दें। माता जी को श्री चरणों में स्थान मिले दिनांक 21 जनवरी को प्रयागराज के नीम सराय मुंडेरा निजी निवास में दोपहर 12 बजे उनका अंतिम संस्कार होगा

इजराइल जापान व जर्मनी में नर्सिंग एवं केयर गिवर की जॉब का शिक्षित बेरोजगार अभ्यर्थियों के लिए अवसर

कौशाम्बी। जिला सेवायोजन अधिकारी गौतम घोष द्वारा अवगत कराया गया कि नर्सिंग के क्षेत्र में शैक्षणिक योग्यता रखने वाले युवाओं के लिए इजराइल/जापान व जर्मनी में नर्सिंग एवं केयर गिवर आदि के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार प्रदान करने की प्रक्रिया में भारत सरकार इजराइल, जापान एवं जर्मनी सरकार के मध्य हुए अनुबंध के अन्तर्गत एनएसडीसी क्रियान्वयन संस्था नामित है एनएसडीसी इंटरनेशनल लि0 द्वारा इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थियों को इजराइल, जापान एवं जर्मनी भेजे जाने की कार्यवाही की जानी है। इच्छुक अभ्यर्थी सेवायोजन विभाग के पोर्टल पर विस्तृत विवरण देखते हुए अपना पंजीयन करके आवेदन कर सकते हैं।

चार सवारी के परमिट पर भरते हैं 10 सवारी देखती रहती हैं पुलिस और एआरटीओ

गलत तरीके से मंझनपुर से भरवारी मूरतगंज महंगाव होते हुए इलाहाबाद की सड़कों पर दौड़ रही है दर्जनों प्राइवेट बसें

कौशाम्बी। गलत तरीके से प्राइवेट बस दौड़ने के मामले में वीडियो वायरल होने के बाद जिला अधिकारी ने निर्देश दिया कि प्राइवेट बसों की जांच की जाए उन्हें बंद कराया जाए लेकिन जिलाधिकारी के निर्देश के बाद भी प्राइवेट बस नहीं बंद हो सकी है और गलत तरीके से सड़क पर दौड़ रही हैं गलत तरीके से सड़कों पर चलने वाले विक्रम अप्पे सीएनजी ऑटो वाहनों की जांच पड़ताल के लिए बनाए गए कानून नियम और सरकार द्वारा बार-बार भेजे गए आदेश के बाद भी यातायात व्यवस्था में सुधार नहीं हो सका है योगी सरकार के लगभग 7 वर्षों से अधिक के कार्यकाल के बाद भी कौशाम्बी की यातायात व्यवस्था पूरी तरह से चौपट है चौपट यातायात व्यवस्था के चलते रोज दुर्घटनाएं होती हैं जांच के नाम पर केवल बाइक सवारो का शोषण किया जा रहा है सड़क पर दौड़ने वाले विक्रम ऑटो अप्पे सीएनजी वाहनों में चार से 6 सवारी का परमिट लेने के बाद 10 और 12 सवारी भरकर ओवरलोडिंग तरीके से पूरे दिन सड़कों पर यह वाहन दौड़ते हैं आधे से अधिक वाहन चालकों के पास चालक का कामर्सियल लाइसेंस नहीं है लेकिन फिर भी सड़क पर वाहन दौड़ते हैं दो तिहाई वाहनों की नंबर प्लेट और उनके वाहन एआरटीओ द्वारा बनाए गए नियमों को पूरा नहीं करते हैं लेकिन उसके बाद भी विक्रम अप्पे सीएनजी ई रिक्शा और ऑटो सड़क पर बेखौफ तरीके से दौड़ते हैं इन वाहन चालकों द्वारा पुलिस की मौजूदगी में पूरे दिन डामर सड़क पर वाहन खड़ा करके सवारी भरी जाती है काली सड़क वाहन स्टैंड बन गया है सड़क पर अचानक गाड़ी रोककर सवारियां उतारी जाती है लेकिन फिर भी इन वाहन चालकों पर कार्यवाही नहीं होती है आंकड़ों पर गौर करें तो जिले के विभिन्न सड़कों में 5000 से अधिक विक्रम अप्पे सीएनजी ऑटो सड़क पर प्रतिदिन सवारी ढोने में लगे हैं ई रिक्शा व अन्य साधन अलग से सड़क पर सवारी ढोते देखे जाते हैं मंझनपुर से भरवारी मूरतगंज महंगाव होते हुए इलाहाबाद की सड़क पर प्राइवेट बसें भी गलत तरीके से सड़कों पर दौड़ रही है शिकायत के बाद भी कार्रवाई नहीं होती।

मुकदमे में वांछित कार को रोकने पर हंगामा

प्रदेश सचिव गो सेवा राष्ट्रीय हिंदू स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता ने दरोगा से की बदसलूकी वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

कौशाम्बी। जिले में मंझनपुर मुख्यालय पर सोमवार की दोपहर पुलिस की वाहन चेकिंग के दौरान मुकदमे में वांछित कार अचानक दिखाई पड़ गई, जिसपर प्रदेश सचिव गो सेवा राष्ट्रीय हिंदू स्वयंसेवक संघ लिखा हुआ था। यह देख कर दरोगा अखंडानंद ने उसे रोक लिया और थाने ले जाने के लिए कहा। आरोप है कि प्रदेश सचिव गो सेवा राष्ट्रीय हिंदू स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता ने दरोगा से बदसलूकी की, बात इतनी बढ़ी की वहां पर बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। आरोप है कि कार्यकर्ता ने कार को थाने ले जाने की जिद पर अड़े दरोगा को कार में आग लगा देने की धमकी दे दी, लेकिन इसके बाद भी दरोगा नहीं माने और कार को थाना में ले जाकर दाखिल कर दिया और कार्रवाई शुरू कर दी। दरअसल कार के विरुद्ध मंझनपुर थाने में सड़क दुर्घटना का मुकदमा दर्ज हुआ है। मंझनपुर पुलिस कार मालिक को कार थाने लाने के लिए कहा लेकिन वह थाने नही गया। सोमवार को वाहन चेकिंग के दौरान दरोगा को वही कार आती दिखी तो दरोगा ने कार मालिक से कार थाने लेकर चलने को कहा, जिस पर कार मालिक दरोगा से भिड़ गया।वहीं मौके पर मौजूद एक दरोगा खड़े थे वह भी दरोगा अखंडानंद से भिड़ गए।दोनो दरोगा के बीच भी काफी बहस हुई। हालांकि थाने से आई पुलिस फोर्स अपने साथ कार को थाने ले गई है और आगे की जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

दबंग जबरन कर रहे हैं भूमि पर अवैध निर्माण, समाधान दिवस में शिकायत

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के महमूदपुर मनौरी स्थित तीन कमरा बने मकान पर गुंडई के दम पर दबंग किस्म का व्यक्ति ताला तोड़कर कब्जा कर लिया और अवैध निर्माण कार्य कर रहा है। जिसकी शिकायत सुरेश चन्द्र पुत्र स्व० राम लखन गुप्ता निवासी महमूदपुर मनौरी ने संपूर्ण समाधान दिवस में शिकायती पत्र देकर दबंग के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। जानकारी के अनुसार सुरेश गुप्ता दिनांक 08.08.2022 को विक्रेता सतीश, शिवमूरत, राममूरत पुत्रगण राजाराम निवासी महमूदपुर मनौरी से महमूदपुर मनौरी की पुरानी आ० सं०- 56 नई आ०सं०- 109 मे रकबा 56 वर्ग मी0 20 फिट लम्बा व 30 फिट गहरा जमीन क्रय किया था जिस पर प्रार्थी तीन कमरे का निर्माण कराकर ताला लगा दिया। प्रार्थी के द्वारा निर्माण कराए गए तीन तीनों कमरे का ताला तोड़कर शिव कुमार केशरवानी पुत्र अयोध्या प्रसाद निवासी उपरोक्त के द्वारा जबरन दंबगयी व गुण्डई पूर्वक मकान का ताला तोडकर अपना ताला लगा दिया और निर्माण कार्य कर रहा है। प्रार्थी ने लिखित शिकायत पिपरी थाना में दिया फिर भी संतोष जनक कार्यवाही नही हुई जिसके बाद प्रार्थी संपूर्ण समाधान दिवस में शिकायत कर तत्काल निर्माण कार्य पर रोक लगाए जाने की मांग करते हुए अवैध कब्जे धारक के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है

जिले में बेखौफ चोरों के हौंसले बुलंद

कौशाम्बी। जिला मुख्यालय मंझनपुर में जिलाधिकारी कार्यालय के पीछे बेखौफ चोरो ने बीती रात चोरी की वारदात को अंजाम दिया है भाजपा नेता के घर से चोर दो भैंस खोल ले गए हैं। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के जिलाधिकारी कार्यालय के पीछे बाउंड्री से लगे भाजपा नेता धर्मराज के घर में बंधी दो भैंसों को चोरों ने गायब कर दिया है सवाल इस बात का खड़ा होता है कि आखिर जब जिला मुख्यालय में चोरों के हौसले इतने बुलंद है तो जिले के अन्य थाना इलाकों में बदमाश किस तरह से चोरी की वारदात को अंजाम देते होंगे इसका महज आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है।

सम्पादकीय

युद्ध विराम समझौते का ईमानदारी से पालन जरूरी

यह शांतिपूर्ण विश्व संरचना के लिये सुखद ही है कि करीब डेढ़ वर्ष से जारी इस्त्राइल-हमास संघर्ष खत्म करने के लिये युद्धविराम पर सहमति बन गई है। लेकिन इस एवं ऐसे युद्धों ने ऐसे अनेक ज्वलंत प्रश्न खड़े किये हैं कि जब युद्ध की अन्तिम निष्पत्ति टेबल पर बैठकर समझौता करना ही है तो यह युद्ध के प्रारंभ में ही क्यों नहीं हो जाता? युद्ध भीषणतम तबाही, असंख्य लोगों की जनहानि एवं सर्वनाश का कारण बनता है तो ऐसी तबाही होने ही क्यों दी जाये? खेर देर आये दुरस्त आये, इजराइल और हमास ने बुधवार को युद्ध विराम समझौते के पहले मसौदे पर सहमति जताई, जो संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में अब तक का सबसे बड़ा एवं अहम कदम है। अन्य बातों के अलावा, 60-दिवसीय युद्ध विराम प्रक्रिया में दोनों पक्षों के बंधकों को रिहा करना, सहायता बढ़ाना, नष्ट हो चुके फिलिस्तीन का पुनर्निर्माण करना और हमलों को रोकना शामिल होगा। डेढ़ साल से अधिक समय के युद्ध के बाद, युद्ध विराम फिलिस्तीन के लोगों तथा हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों के लिए बहुत जरूरी राहत है। इसी तरह रूस एवं यूक्रेन के बीच लम्बे समय से चल रहा युद्ध भी समाप्त हो, यह शांतिपूर्ण उन्नत विश्व संरचना के लिये नितांत अपेक्षित है। क्योंकि ऐसे युद्धों से युद्धरत देश ही नहीं, समूची दुनिया पीड़ित, परेशान एवं प्रभावित होती है। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने देता है। ऐसे युद्धों में वैसे तो जीत किसी की भी नहीं होती, फिर भी इन युद्धों का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देता, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने के साथ बड़ी जनहानि का भी बड़ा कारण बनता है।

इस्त्राइल-हमास में पिछले डेढ़ साल से चल रहे युद्ध के विराम को एक अहम कामयाबी माना जा रहा है। भले ही इस समझौते के लिये अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के बीच संघर्ष समाप्ति का श्रेय लेने की होड़ हो, लेकिन गाजा के लोग जिस मानवीय त्रासदी से जूझ रहे थे, उन्हें जरूर इससे बड़ी राहत मिलेगी। संयुक्त राष्ट्र के तमाम प्रयासों व मध्यपूर्व के इस्लामिक देशों एवं भारत की बार-बार की गई पहल के बावजूद अब तक शांति वार्ता सिरे न चढ़ सकी थी। जिसकी कीमत करीब पचास हजार लोगों ने अपनी जान देकर चुकायी। इस युद्ध से गाजा के विभिन्न क्षेत्रों में जो तबाही हुई है, उससे उबरने में दशकों लग सकते हैं। निस्संदेह, इस्त्राइल व हमास के बीच युद्ध विराम पर सहमति होना महत्वपूर्ण है, लेकिन जब तक समझौता यथार्थ में लागू होता न नजर आए, तब कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। संघर्ष में वास्तव में हमास के कितने लड़ाके मारे गए यह कहना कठिन है, लेकिन बड़ी संख्या में बच्चों-महिलाओं ने युद्ध में जान गवांई। एक अनुमान के अनुसार गाजा संघर्ष में उपजी मानवीय त्रासदी में करीब बीस लाख लोग विस्थापित हुए हैं। इस्त्राइली हमलों में अस्पताल-स्कूल भी निशाना बने, जिन्हें शरणार्थियों की सुरक्षित पनाहगाह माना जाता है। इस्त्राइल पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में युद्ध अपराध तक के आरोप लगाए गए।

ट्रम्प ने शांतिवादियों और उदारवादियों को किया हैरान

- नित्य चक्रवर्ती

राष्ट्रपति पुतिन के साथ आखिरकार कोई समझौता हो जाता है, चाहे जो भी शर्तें हों, तो यह दक्षिणपंथी रिपब्लिकन के लिए एक और उपलब्धि होगी। पिछले करीब तीन सालों से युद्ध विरोधी आंदोलन और यूरोपीय वामपंथी और उदारवादी फिलिस्तीन में इजरायल के नरसंहार और यूक्रेन में युद्ध की समाप्ति की मांग कर रहे हैं। 20 जनवरी को अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रम्प के शपथ ग्रहण से ठीक पांच दिन पहले इजराइल और हमास के बीच गाजा पर घोषणा ने शांति आंदोलन के कई नेताओं और वामपंथी उदार राजनीतिक विश्लेषकों को भी हैरान कर दिया है कि इस कट्टर दक्षिणपंथी रिपब्लिकन की नीतियों का सही तरीके से आकलन कैसे किया जाये।

डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडेन 7 अक्टूबर, 2023 को हमास-इजराइल युद्ध शुरू होने के बाद से पिछले पंद्रह महीनों में जो हासिल नहीं कर सके, ट्रम्प ने पिछले साल 4 नवंबर को अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में अपने चुनाव के कुछ ही हफ्तों बाद इसे हासिल कर लिया। उन्होंने औपचारिक रूप से सत्ता संभालने से पहले यह काम किया।

इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध में अब तक 1200 से ज्यादा इजरायली मारे जा चुके हैं, जबकि फिलिस्तीनियों की संख्या 46,000 के आसपास है, जिसमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। राष्ट्रपति बाइडेन ने इजरायल की मदद करना जारी रखा और हाल के हफ्तों में डेमोक्रेटिक प्रशासन के प्रयासों के बावजूद, कुछ भी ठोस नहीं निकला।

इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू नरसंहार जारी रखने के लिए दृढ़ थे और उन्हें इजरायली रक्षा बलों का पुरजोर समर्थन प्राप्त था, जो गाजा से हर एक फिलिस्तीनी को बाहर निकालने की बात कर रहे थे। लेकिन नवंबर के चुनावों के बाद परिदृश्य बदल गया जब ट्रम्प ने मध्य पूर्व में युद्ध को समाप्त करने की पहल की। पांच दिन पहले ट्रम्प के सलाहकारों ने नेतन्याहू के खिलाफ अंतिम आक्रमण शुरू किया ताकि ट्रम्प के आधिकारिक रूप से कार्यभार संभालने से कुछ दिन पहले उन्हें युद्धविराम के लिए सहमत होने के लिए मजबूर किया जा सके।

पिछले शुक्रवार को मध्य पूर्व में ट्रम्प के विशेष दूत स्टीवन विटकॉफ ने दोहा से नेतन्याहू को फोन किया और इजरायली पीएम से कहा कि वह शनिवार की सुबह उनसे मिलेंगे। शब्बत चल रहा था। यहूदी आमतौर पर इस पवित्र अवधि के दौरान आराम करते हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय ने उन्हें बताया कि अमेरिकी दूत कुछ दिनों के बाद प्रधानमंत्री से मिल सकते हैं, लेकिन विटकॉफ ने कहा कि वे सुबह पहुंचेंगे और नेतन्याहू को खुद को तैयार रहना चाहिए। बैठक के बाद इजरायली मीडिया ने बताया कि विटकॉफ ने नेतन्याहू को अल्टीमेटम दिया और कहा कि अगर इजरायल भविष्य में ट्रंप का समर्थन चाहता है, तो उसे ट्रंप के शपथ ग्रहण से कुछ दिन पहले ही युद्धविराम के मसौदे पर जल्द से जल्द सहमत हो जाना चाहिए। ट्रंप चाहते हैं कि इसकी घोषणा अगले सप्ताह की जाये। नेतन्याहू हिचकिचा रहे थे, लेकिन वे समझ गये थे कि कोई विकल्प नहीं है, उन्हें सहमत होना ही था।

इस सप्ताह दैनिक समाचार पत्र येदिओथअहरोनोथ में लिखते हुए, एक शीर्ष इजरायली टिप्पणीकार ने इजरायल के प्रधानमंत्री और उनके करीबी सहयोगियों के सामने आने वाली स्थिति का सारांश दिया। 'नेतन्याहू ... अचानक यह समझ गये कि वे नये अमेरिकी

राष्ट्रपति के साथ कहां खड़े हैं। उन्हें एहसास हुआ कि ट्रंप हुक्म चलाने की गति से बोलते हैं, और वे कभी भी उन्हें दाईं ओर से मात नहीं दे पायेंगे। ट्रंप, एक बार फिर, एक सौदा चाहते हैं।'

ट्रंप ने बुधवार को ही सोशल मीडिया पर अपनी टिप्पणी देकर इस डील का श्रेय लिया। बाइडेन सरकार इस सप्ताह भी विदेश मंत्री एंटनीब्लिंकन के साथ मिस्र, तुर्की और कतर के साथ युद्धविराम के फॉमूर्ले पर चर्चा कर रही थीं। लेकिन बंधकों की क्रमिक रिहाई और छह महीने के युद्धविराम पर हुए युद्धविराम समझौते में कुछ ऐसे बिंदु थे, जिनसे नेतन्याहू सहमत नहीं थे। शनिवार को ट्रंप के दूत के साथ हुई बैठक में यह सब तय हो गया, क्योंकि यह एकतरफा था। नेतन्याहू को बोलने का समय नहीं मिल पाया।

ट्रंप ने अपनी तानाशाही पद्धति अपनाई, लेकिन यह कारगर साबित हुई और यहीं ट्रंप के इस सिद्धांत की सार्थकता है। इससे युद्ध की समाप्ति हो सकती थी या इससे कहीं बड़ी लड़ाई हो सकती थी। लेकिन फिलहाल गाजा में युद्ध को फिलहाल खत्म करने का काम हो चुका है। ट्रंप ने इसे सुगम बनाया है, जिसे बाइडेन नहीं कर सके। खास बात यह है कि राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अमेरिकी श्रमिकों के लिए कई कल्याणकारी कदम उठाये हैं, जिसमें कुछ उद्योगों में यूनियन बनाने का अधिकार शामिल है, जहां पहले इसकी अनुमति नहीं थी। लेकिन वे विदेश नीति में विफल रहे। उन्होंने इजरायल और यूक्रेन दोनों का समर्थन किया और दोनों को हथियार आपूर्ति जारी रखी।

माना जाता है कि गाजा डील में तीन चरण का समझौता शामिल है- जो मूल रूप से बाइडेन द्वारा निर्धारित रूपरेखा पर आधारित है और जिसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा समर्थन दिया गया है। इसमें छह सप्ताह की अवधि में 33 इजरायली बंधकों की रिहाई का प्रावधान है, जिसमें महिलाएं, बच्चे, वृद्ध और घायल नागरिक शामिल हैं, बदले में संभवतः सैकड़ों फिलिस्तीनी महिलाओं और बच्चों को इजरायल द्वारा कैद से मुक्त किया जायेगा। 33 में से पांच महिला इजरायली सैनिक होंगी, जिनमें से प्रत्येक को 50 फिलिस्तीनी कैदियों के बदले में रिहा किया जायेगा, जिनमें आजीवन कारावास की सजा काट रहे 30 दोषी आतंकवादी शामिल हैं। पहले चरण के अंत तक, सभी नागरिक बंदी- जीवित या मृत- रिहा कर दिये जाएंगे। महत्वपूर्ण रूप से, लड़ाई को शुरूआती छह सप्ताह के लिए रोकने के लिए, समझौते की योजना युद्ध को पूरी तरह से समाप्त करने के उद्देश्य से आगे की बातचीत का रास्ता खोलने की है।

दुनिया में चल रहा दूसरा बड़ा युद्ध यूक्रेन में है जिसमें रूस शामिल है। राष्ट्रपति बाइडेन ने युद्ध को समाप्त करने के लिए खुद कोई पहल नहीं की। उन्होंने यूक्रेन को हथियार भेजना जारी रखा और कुछ दिन पहले ही रूस के खिलाफ और प्रतिबंध लगाये। इसके विपरीत, ट्रम्प ने जल्द ही अपनी जीत के बाद यूक्रेन में युद्ध की समाप्ति को अपनी प्राथमिकता बताया और संकेत दिया कि वे राष्ट्रपति पुतिन से मिलेंगे। रूसी अधिकारियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। उम्मीद है कि ट्रम्प के पदभार संभालने के तुरंत बाद शिखर सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। अगर राष्ट्रपति पुतिन के साथ आखिरकार कोई समझौता हो जाता है, चाहे जो भी शर्तें हों, तो यह दक्षिणपंथी रिपब्लिकन के लिए एक और उपलब्धि होगी। पिछले करीब तीन सालों से युद्ध विरोधी आंदोलन और यूरोपीय वामपंथी और उदारवादी फिलिस्तीन में इजरायल के नरसंहार और यूक्रेन में युद्ध की समाप्ति की मांग कर रहे हैं। दोनों युद्धों में युद्धविराम लाने में ट्रम्प की सफलता निश्चित रूप से एक उपलब्धि होगी, चाहे वह इसे कैसे भी लेकर आयें। उनकी विदेश नीति की पहल बड़ी शक्ति सरकारों के प्रमुखों की नकल नहीं कर रही है। अमेरिका के नये राष्ट्रपति देश के भीतर श्रम विरोधी और अमीर समर्थक नीतियों के नायक के रूप में उभर सकते हैं, लेकिन बाहरी दुनिया में संघर्षों को समाप्त करने के साधक के रूप में। निश्चित रूप से अमेरिका और दुनिया दोनों के लिए एक दिलचस्प समय है।

नर्मदा की जोड़ने वाली मेला संस्कृति

- बाबा मायाराम

मेले में सर्कस और रामलीला आकर्षण का केन्द्र हुआ करते थे। माइक पर गीत पुराने सिनेमा गीत व धार्मिक भजन बजते रहते थे। नर्मदा की नरम-नरम रेत पर पैदल चलना अच्छा लगता था। मेले में भारी भीड़ होती थी। इधर से उधर लोग घूमते रहते थे। परकम्मावासियों की हर-हर नर्मदे की आवाजें ध्यान खींचती थी। महिलाएं और बच्चे बड़ी संख्या में आते थे।

हाल ही में नर्मदा नदी के किनारे सांडिया में मकर संक्रांति का मेला लगा। इसी तरह नर्मदा के किनारे जगह-जगह मेले लगते हैं। मुझे नर्मदा के किनारे रहने के कारण बार-बार नर्मदा के दर्शन हुए हैं। बचपन से ही मैं नर्मदा मेलों में जाता रहा हूं, आज नर्मदा की मेला संस्कृति पर यह कॉलम है, जिससे हम यह समझ सकें कि नर्मदा सिर्फ नदी ही नहीं है, जनसाधारण श्रद्धालुओं के लिए नर्मदा मैया है, यानी मां है, जीवनदायिनी है।

मैं नर्मदा के किनारे मध्यप्रदेश के पूर्वी छोर पर एक कस्बे में रहता हूं। यहां हम पूर्णिमा के दो-तीन पहले से ही सरै भरते (साष्टांग लेटकर नर्मदा तक जाना) हुए श्रद्धालुओं को देखते हैं। वे दूर-दूर से आते हैं। एक दिन पहले तो रात भर हर-हर नर्मदे का जयकारा करते हुए नर्मदा जाने वालों का तांता लगा रहता है। पैदल, साइकिल, मोटर साइकिल, ट्रेक्टर-ट्राली और चार पहिया वाहनों से जनधारा नर्मदा की ओर बहती रहती है।

पिपरिया से सांडिया की दूरी करीब 20 किलोमीटर है। नर्मदा अमरकंटक से उद्गमित होकर इसी इलाके से होकर गुजरती है। मैं कई बार इन मेलों में जाता रहा हूं। यह मेले उत्साह से भर देते हैं। मेलों का उद्देश्य भी यही रहा है।

नर्मदा, अमरकंटक से उद्गमित होकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र से होते हुए गुजरात में जाकर खम्बात की खाड़ी में मिलती है। इस दौरान वह करीब 13 सौ किलोमीटर की दूरी तय करती है। इस बीच इसमें कई सहायक नदियां मिलती है, जो इसे सदानीरा बनाती रही हैं। इसके किनारे कई प्रसिद्ध मंदिर व धर्मशालाएं हैं। जलप्रपात व कई दर्शनीय स्थल हैं। कई पुरातात्विक महत्व के अवशेष भी मिले हैं।

नर्मदा की श्रद्धालु परकम्मा (परिक्रमा) करते हैं। पहले पैदल करते थे, अब भी कुछ करते हैं, लेकिन अब पैदल के साथ बस व रेल से भी करने लगे हैं। परकम्मा के नियम होते हैं। जबलपुर के प्रसिद्ध चित्रकार अमृतलाल वेगड़ ने परकम्मा की थी, और यात्रा वृत्तांत पर तीन किताबें भी लिखी हैं, जो काफी चर्चित रही। मैंने स्वयं वेगड़ जी से मिलकर नर्मदा परकम्मा के अनुभव सुने हैं। इसी प्रकार कुछ विदेशी श्रद्धालुओं ने भी नर्मदा पर किताबें लिखी हैं।

मेला शब्द की व्युत्पत्ति मिल हुई है। यानी मिलना, देखना, साक्षात्कार करना। इसमें मेल-मिलाप करते हैं। चूंकि पहले बाजार दूरदराज हुआ करते थे और निश्चित दिन बाजार लगते थे। इसलिए मेले में बाजार लगता था। कुछ बुजुर्ग लोगों का कहना है कि हम यहां से सभी गृहस्थी का सामान ले जाते थे। मेले में मनोरंजन भी होता था। नाटक, नौटंकी, रामलीला, झूले आदि से मनोरंजन होता था। लेकिन अब बाजार लोगों के घर तक पहुंच गया है। अब पहले की अपेक्षा कम खरीदारी होती है। चूंकि ग्रामीण जनजीवन की गति धीमी होती है। इसलिए मेले व उत्सव उनमें उत्साह का संचार कर देते हैं।

मेलों के लिए लोग काफी तैयारी करते हैं। नए कपड़े पहनते हैं। धरउअल (संभालकर रखे हुए) कपड़े निकालते हैं। खासतौर से महिलाओं व बच्चों में ज्यादा उत्साह रहता है, क्योंकि उन्हें घर गांव से निकलने का मौका कम मिलता है। मेले में बड़ी संख्या में युवा घूमते दिख जाते हैं। वे झूले झूलते व दुकानों पर अपने मन पसंद सामान खरीदते देखे जा सकते हैं।

यहां कई तरह की घरेलू चीजें मिलती हैं। अगर मैं बचपन को याद करूं, तो मेले में बैलगाड़ी से जाया करते थे। मेले के लिए बैलों की साज-सज्जा देखते ही बनती है। उन्हें नहलाना, रंगना और मुछेड़ी (रंग-बिरंगी रस्सियां बांधना) बांधना, यह सब मेले की तैयारी का हिस्सा हुआ करते थे। हालांकि अब बैलगाड़ी नहीं के बराबर होती हैं। लेकिन याद ऐसी ताजी है जैसी कल की ही बात हो।

बचपन से ही मैं परिवार के साथ बैलगाड़ी से नर्मदा जाया करता था। छोटी बैलगाड़ी को बग्घी कहते थे। उसमें तीन-चार लोग ही बैठते थे। बैलगाड़ी के चक्के के ऊपर की पात चमकती थी। रास्ता कच्चा होता था। उसे गड़वाट कहते थे। गड़वाट यानी जो बैलगाड़ी के आने-जाने से स्वतः ही बन जाती है।

बैल तेजी से दौड़ते थे। धूल उड़ती जाती थी। रास्ते में हरे-भरे खेत पड़ते थे। ज्वार व अरहर के पौधों से हमसे टकरा जाते थे। नरम- नरम हथेली से स्पर्श करना, इन पौधों को बहुत अच्छा लगता था। चक्कों की चूं-चर्र आवाज और बैलों के गले में बंधे घुंघरू मिलकर संगीतमय वातावरण बनाते थे। मन उमंग से भरा होता था।

हम मेले में दो-तीन दिन रुकते थे। पेड़ के नीचे हमारा डेरा होता था। बैलों को यही बांध देते थे। उनके चरने के लिए धान का पुआल घर से ही बैलगाड़ी में धरके लाया जाता था। ठंड के लिए उन्हें टाट के बोरों से ढंक दिया जाता था, जिससे उन्हें ठंड न लगे। नर्मदा के किनारे विशाल इमली के पेड़ हुआ करते थे। कई बच्चे इन इमली की शाखों से झूलते रहते थे। सामने नर्मदा का विशाल घाट होता था और मेले की भीड़भाड़। घाट ऊपर से लोग छोटे-छोटे दिखते थे।

मेले में सर्कस और रामलीला आकर्षण का केन्द्र हुआ करते थे। माइक पर गीत पुराने सिनेमा गीत व धार्मिक भजन बजते रहते थे। नर्मदा की नरम-नरम रेत पर पैदल चलना अच्छा लगता था।

मेले में भारी भीड़ होती थी। इधर से उधर लोग घूमते रहते थे। परकम्मावासियों की हर-हर नर्मदे की आवाजें ध्यान खींचती थी। महिलाएं और बच्चे बड़ी संख्या में आते थे। मिठाईयों की दूकानें सजी होती थीं। भुने चने, मूंगफली, सिंघाड़े इत्यादि भी बिकते थे। रात में नौटंकी और नाटक होते थे। सर्कस भी बहुत बड़ा आकर्षण होता था। झूले व हिड़ोलना भी बच्चों के लिए होते ही थे। यहां तरह के करतब दिखाने वाले भी आते थे। नर्मदा में बड़े झादे (नाव) चलते थे जिन पर लोग तो बैठते थे, साइकिलें, मोटर साइकिलें व गाय-बैल भी बिठा लेते थे।

मेले में विविध रुचि व जरूरत वाले लोग भी आते हैं। पुण्य स्नान तो है ही, साथ ही खरीदने, बेचने, घूमने, फिरने व मनोरंजन के लिए भी लोग आते हैं। यहां गांव, शहर व अलग-अलग व समूहों में लोग आते हैं। अब बैलगाड़ी की जगह ट्रेक्टर व आटो रिक्शा से लोग आते हैं। टोलियों में लोग नर्मदा मैया के जयकारा करने के साथ झंडे हाथों में लिए आते हैं।

बच्चों के लिए आकर्षण खिलौने व मिठाईयां हुआ करती हैं। पुंगी, फिरकनी, बांसुरी, गुब्बारे और गेंद इत्यादि। महिलाएं यहां रसोई में काम आने वाली कई चीजें खरीदते देखी जा सकती हैं- जैसे झारा, कढाई, बेलन, थालियां, कटोरी इत्यादि। इसके अलावा, यहां भोजन में दाल बाटी, और बैगन का भर्ता भी काफी प्रसिद्ध है। इसे बनाना सरल भी है। आजकल जगह-जगह भंडारे भी होते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में लोग भोजन करते हैं।

कुल मिलाकर, इन मेलों में प्रेम और भाईचारा दिखाई देता है। यह हमारी जमीन से जुड़ी देसी मेला संस्कृति है, जो एक दूसरे को जोड़ती है। एक दूसरे से बतियाने व मिलने का मौका देती है। संस्कृतियों के आदान-प्रदान का मौका देती है। मेला संस्कृति हमें सामूहिकता का भाव देती है। और उन अच्छी परंपराओं से जोड़ती है, जो हमें खुद से परे लोगों से मिलाती है।

जिस तरह छोटी नदियां नर्मदा में आकर एक हो जाती हैं, उसी तरह जनसाधारण भी मेलों में आकर नर्मदा की शरण में आकर एक हो जाते हैं। यह संस्कृति आज की दिखावे और तामझाम की संस्कृति से दूर ठेठ ग्रामीण देसी मिट्टी की उपज है, जो सालों से विकसित हुई है। लेकिन ये नदियां कई कारणों से पहले से कमजोर भी हो रही हैं, प्रदूषित भी हो रही हैं, जलवायु बदलाव की मार भी झेल रही हैं। क्या हम इन्हें बचाने और मेला संस्कृति को कायम रखने के लिए दिशा में सचमुच कुछ करने को तैयार हैं?

एल एंड टी को भारी पड़ेगी सुब्रमण्यन की भद्दी टिप्पणी

- लेखा रत्तनानी

भारत को नई पीढ़ी के लीडर्स की शक्ति और सोच का उपयोग करने के लिए पुराने लोगों को अधिक सवालों के साथ जीना सीखना होगा। वे इस मुगालते में न रहें कि वे ही सही हैं। उन्हें इस गहरे एहसास के साथ यह भी समझना होगा कि वे उतने असाधारण नहीं हैं जितना वे खुद के बारे में सोचते हैं। चूंकि ऐसा कोई सबूत नहीं है कि ऐसा कुछ जल्द हो सकता है। लार्सन एंड टूब्रो यानी एल एंड टी के अध्यक्ष और 60 वर्षीय प्रबंध निदेशक एसएन सुब्रमण्यन, जिन्हें कंपनी में एसएनएस के नाम से जाना जाता है, के एक बयान ने हंगामा खड़ा कर दिया है। वे तड़क-भड़क जिंदगी जीने और हेडलाइन आकर्षित करने वाले सीईओ के रूप में मशहूर नहीं हैं, जिस जीवनशैली के लिए कुछ अपस्टार्ट सीईओ मशहूर हैं।

एसएनएस एक ऐसे समूह की अध्यक्षता करते हैं जिसका 80 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। इसमें 50 देशों में 50 हजार से अधिक लोग काम कर रहे हैं और जिसका 2024 में 2.2 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वार्षिक कारोबार है। यह लगभग अविश्वसनीय है कि इतना वरिष्ठ नेता इस तरह की टिप्पणी करेगा कि- 'अगर उसका बस चला तो वह कर्मचारियों को रविवार को काम पर ले जाएगा क्योंकि दूसरा विकल्प, उनके शब्दों में, घर पर बैठना और अपनी पत्नी को घूरना है।' यह बात उन्होंने जिस वीडियो में कही है वह लीक हो गया है; पर ऐसा कौन करना चाहेगा? एल एंड टी की सफलता की कहानी में कई महिलाओं का योगदान है जो गर्व की बात है और इससे एसएनएस बहुत बुरी तरह से एक्सपोज हो गए। दीपिका पादुकोण ने सही कहा है- 'इस बयान पर लीपापोती करने हड़बड़ी ने इसे और भी बदतर बना दिया।' एसएनएस की टिप्पणी में महिलाओं के प्रति व्यक्त अनादर के लिए माफी तो नहीं मांगी गई लेकिन इस बयान में शामिल सप्ताह में 90 घंटे काम करने के नुस्खे को हाईलाईट करते हुए बाद में इसे राष्ट्र निर्माण के आह्वान के रूप में समझाने का प्रयास किया गया जो उनकी टिप्पणियों के कपटपूर्ण होने की ओर इशारा करता है। क्या एसएनएस की इस टिप्पणी में आईटी क्षेत्र के दिग्गज एनआर नारायण मूर्ति (भारतीय ट्रेड यूनियनों के शब्दों में 'शैतानी') जैसे आईटी लीडर के 70 घंटे के सप्ताह की मांग करने वाले अप्रिय आह्वान का समर्थन छिपा था; या वे उनसे कुछ बेहतर कर दिखाने की इच्छा रखते हैं? एल एंड टी द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण लोगों के लिए केवल यह निष्कर्ष निकालने की अधिक संभावना बनाता है कि यह टिप्पणी बिला वजह नहीं हो सकती थी। अगर हम इस दृष्टिकोण को मान्यता देते हैं कि एसएनएस इस प्रकार के घुमावदार बयानों के लिए जाने जाते हैं और वास्तव में इसका वह मतलब नहीं है जो निकाला गया है, तो भी ऐसे बड़े मुद्दे हैं जो सामने आते हैं तो भारत में सीईओ उनसे हाथ झटक लेते हैं। जो मामले अब प्रकाश में आते हैं और बहुत से प्रकरणों की एक छोटी सी झलक पेश करते हैं, वे बताते हैं कि भारतीय कॉरपोरेट क्षेत्र में कुछ गलत चल रहा है। यह बयान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस सप्ताह के अंत में 'विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025इ में दिए भाषण का समर्थन देने के लिए नहीं है कि 'भारत की युवा शक्ति भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाएगीइ। ये सीईओ ऐसा सोच सकते हैं कि राजनीतिक नेतृत्व यह सोचे कि वे सरकार की धुन में गा रहे हैं, लेकिन यह राजनीतिक नेतृत्व के हित में है कि वे इस तरह के ढोंग से सावधान रहे। कर्मचारियों और सामान्य तौर पर जेनरेशन जूमर (संक्षिप्त में जेनजेड- वह पीढ़ी जो 1995 से 2010 के बीच जन्मी है) के बीच मूर्ति और अब एसएनएस के लिए तिरस्कार को सुना, देखा तथा विश्वास किया जाना है। सवाल यह है कि इस महत्वपूर्ण परिवर्तन को कौन मापेगा? अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की जानी चाहिए ताकि न केवल एसएनएस बल्कि सभी सीएक्सओ को उचित रूप से कायदे में रखा जाए और जहां जरूरी हो वहां मजबूत नियामक उपाय किए जाएं। उल्लेखनीय है कि एसएनएस को वित्त वर्ष 2023-24 के लिए कुल पारिश्रमिक के रूप में 51.05 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया था जो एल एंड टी में औसत पारिश्रमिक का 534.57 गुना है। यह पिछले साल उन्हें किए गए भुगतान की तुलना में 43.11 प्रतिशत अधिक है। यह पारिश्रमिक सभी कर्मचारियों में सबसे अधिक है। यह वेतन एल एंड टी में दूसरे सबसे अधिक वेतन वाले कर्मचारी तथा कंपनी के अध्यक्ष व सीएफओ आर. शंकर रमन की तुलना में 40 फीसदी ज्यादा है। उनकी टिप्पणी पर एसएनएस के वेतन का औसतन 500 सौवां हिस्सा पाने वाले कर्मचारियों की कैसी प्रतिक्रिया रहेगी? इस संदर्भ में 'विकसित भारत' के एजेंडे में पहला मुद्दा सीएक्सओ द्वारा स्वयं भुगतान की जाने वाली वेतन राशि पर एक सीमा लगाना होना चाहिए। कभी भी सुरक्षा रेलिंग या इन औपचारिकताओं की परवाह नहीं करनी चाहिए कि अपना वेतन वे स्वयं तय नहीं करते बल्कि कम्पनी का बोर्ड करता है। भारतीय संदर्भ में इन औपचारिकताओं ने पर्याप्त रूप से काम नहीं किया है क्योंकि हमारी कंपनियों के बोर्ड अक्सर अपने आप में लचीले होते हैं और अपने हितों को ध्यान में रखते हुए 'चोर-चोर मौसेरे भाई' की तरह काम करते हैं। कुछ चुनिंदा लोग ही खुद को उस सीट पर रखते हैं। ध्यान दें कि डेलॉयट रिपोर्ट के अनुसार एल एंड टी संस्थापकों, स्वर्गीय हेनिंग होल्क-लार्सन और सोरेन टूब्रो के गृह देश डेनमार्क की विकसित अर्थव्यवस्था में कार्यकारी निदेशकों का परिवर्तनीय पारिश्रमिक निर्धारित का औसतन 37 फीसदी शामिल है।

चित्रकूट में 4 दिवसीय रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ, प्रशिक्षण में 65 प्रतिभागियों की भागीदारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान करने व कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीक की जानकारी देने के उद्देश्य से जनपद में माइक्रोईरीगेशन सिस्टम संचालन एवं रख.रखाव विषयक चार दिवसीय रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यह कार्यक्रम 20 से 23 जनवरी 2025 तक कृषि भवन कर्वी के प्रशिक्षण हॉल में आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला उद्यान अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पांडेय ने किया।

प्रतिभा पांडेय ने ड्रिप इरीगेशन व स्प्रिंकलर सिस्टम से जुड़े कार्यक्रमों में सरकार द्वारा दी जा रही अनुदान योजनाओं पर प्रकाश डाला। बताया कि लघुध्सीमांत किसानों को ड्रिप और मिनी स्प्रिंकलर पर 90 प्रतिशत तक अनुदान और सामान्य किसानों को 80 प्रतिशत तक अनुदान मिलता है। पोर्टेबल स्प्रिंकलर और रेनगन के लिए क्रमशः 75 प्रतिशत और 65 प्रतिशत तक अनुदानश्श् उपलब्ध है। किसानों को माइक्रोइरीगेशन तकनीक अपनाकर समय और लागत की बचत करने के लाभों की जानकारी दी। कार्यक्रम में जिले के पांच विकासखंडों से 65 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। विशेषज्ञों ने माइक्रोईरीगेशन में हुए नवीनतम प्रयोगों व उनके व्यावहारिक उपयोग की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंतिम दिन 23 जनवरी 2025 को इंटरप्रेन्योर फेयर का आयोजन होगा। इसमें प्रशिक्षित युवाओं में से योग्य उम्मीदवारों को ड्रिप इरीगेशन कंपनियों द्वारा रोजगार के लिए चयनित किया जाएगा। उद्घाटन में आईएआई यूपी चैप्टर के दीपक माथुरए एग्रीनेक्शट पुणे की को.फाउंडर श्रीमती माधुरी दीक्षित घुगरीए और आईएआई दिल्ली के विशेषज्ञ राजेश यादव व चंचल कुमार मौजूद रहे। कार्यक्रम के सफल संचालन में इंद्रमणिए शशांक कुमारए रामरूद्ध मिश्रए धीरेन्द्र प्रताप सिंहए ईसाक खान समेत अन्य लोग रहे।

कार्यक्रम में संबोधन करती जिला उद्यान अधिकारी प्रतिभा पांडेय।

पुलिस ने जुआं खेलते छह आरोपियों को किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी के निर्देश में अपराध पर अंकुश लगा अपराधियों के विरुद्ध जारी कार्यवाही के क्रम में शहर कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह के मार्गदर्शन में चौकी प्रभारी मण्डी समिति टीम ने अनिल द्विवेदी पुत्र कपूर कुमार द्विवेदी, सुधीर बाबू वर्मा पुत्र गौलाल, राजा विश्वकर्मा पुत्र अयोध्या प्रसाद, राधेश्याम कोरी पुत्र अच्छेलाल, रामाशिवादास पुत्र स्व0 रामकिशोर, जुम्मन मिया पुत्र साहबउद्दीन निवासीगण कसहाई थाना कोतवाली कर्वी चित्रकूट को ताश के पत्तों से हारजीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते गिरफ्तार किया। आरोपियों के कब्जे से 2600 रुपये नकद, 52 ताश के पत्ते व जामा तलाशी से 350 रुपये बरामद हुए। आरोपियों के विरुद्ध थाना कोतवाली कर्वी में मुकदमा लिखा गया। गिरफ्तार करने वाली टीम में दारोगाण् श्याम देव सिंह चौकी प्रभारी मण्डी समिति, सिपाही शिव पूजन, विपिन कुमार, इंदल, अजीत, विनीत मौजूद रहे।

पुलिस गिरफ्त में जुएं के आरोपी।

अपहरण के आरोपी को 5 वर्ष का कारावास समेत 5 हजार रुपये जुर्माना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। माननीय न्यायालय जिला एवं सत्र न्यायाधीश विकास कुमार प्रथम ने थाना मानिकपुर क्षेत्र के अपहरण मामले में आरोपी अरविंद कोल को 5 वर्ष के कारावास व 5 हजार रुपये के अर्थदंड से दंडित किया। सफलता पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश के निर्देश पर चलाए जा रहे ऑपरेशन कन्विक्शन अभियान का परिणाम है। एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी के निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर दुर्गविजय सिंहए मुख्य आरक्षी अजय कुमारए मॉनिटरिंग सेल की टीम व जिला शासकीय अधिवक्ता ने आरोपी को सजा दिलाने में अहम भूमिका निभाई। आठ नवंबर 2020 को वादी ने थाना मानिकपुर में सूचना दी कि आरोपी अरविंद ने उनकी पुत्री को बहला.फुसलाकर भगा लिया। मामले की विवेचना तत्कालीन दारोगा राहुल कुमार ने की। अभियुक्त को 11 नवंबर 2020 को गिरफ्तार किया गया व 28 दिसंबर 2020 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया गया।

11 पर लगा मिनी गुंडा एक्ट

पहाड़ी चित्रकूट। एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी के निर्देश में अपराध पर अंकुश लगाने को अपराधियों के विरुद्ध जारी कार्यवाही के क्रम में एसएचओ पहाड़ी रीता सिंह ने जनता में भय.आतंक फैलाकर गुंडागर्दी करने वाले आरोपियों के विरुद्ध धारा 129 बीएनएसएस की कार्यवाही।

सेंट थॉमस स्कूल: शिक्षा के मंदिर में धर्मनिरपेक्षता पर प्रहार!

शिक्षा के स्तर पर मंथन जरूरी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सेंट थॉमस स्कूल में हाल ही में सामने आई घटना ने शिक्षा प्रणाली की धर्मनिरपेक्षता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। एक कक्षा 10 के छात्र को केवल जय श्रीराम बोलने पर परीक्षा से रोकने का प्रयास करना न केवल असंवैधानिक हैए बल्कि बच्चों के अधिकारों का भी सीधा उलुंघन है। घटना भारत के संविधान के अनुच्छेद 25 ;धार्मिक स्वतंत्रताद्ध और अनुच्छेद 21ए ;शिक्षा के अधिकारद्ध का मजाक बनाती है। हालाँकिए स्कूल प्रशासन व प्रिंसिपल ने मीडिया के दबाव और बढ़ते जनाक्रोश के चलते अपनी गलती स्वीकार कर छात्र को परीक्षा में बैठने दियाए लेकिन सवाल यह है कि ऐसी बड़ी गलती कैसे हो सकती हैघ् अगर यह मामला जनता या मीडिया की नजर में न आताए तो एक मासूम बच्चा शिक्षा से वंचित होकर शोषण का शिकार हो जाता।

घटना दर्शाती है कि स्कूलों जैसे शिक्षा के मंदिर भी धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों को समझने और लागू करने में असफल हो रहे हैं। धर्म के नाम पर भेदभाव करने का यह मामला न केवल एक छात्र के मनोबल को तोड़ने वाला हैए बल्कि शिक्षा तंत्र के गिरते मूल्यों का भी प्रतीक है। ऐसी घटनाएं समाज में एक गलत संदेश देती हैं और छात्रों के अधिकारों को कमजोर करती हैं। यह केवल एक छात्र की लड़ाई नहीं है यह पूरे शिक्षा तंत्र के लिए एक चेतावनी है। अगर स्कूल प्रशासन को इस प्रकार के भेदभावपूर्ण फैसलों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया गयाए तो यह भविष्य में और अधिक गंभीर समस्याओं को जन्म देगा। सेंट थॉमस स्कूल की यह हरकत धर्म और शिक्षा के संतुलन को ध्वस्त करने वाली है।

अब वक्त आ गया है कि समाज और प्रशासन इस मामले को एक उदाहरण के रूप में ले और यह सुनिश्चित करे कि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों। शिक्षा के मंदिर को धर्म और राजनीति से दूर रखकर एक ऐसा माहौल तैयार किया जाए जो सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान करे। शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं हैए यह स्वतंत्रताए समानता और भाईचारे का प्रतिनिधित्व भी है। सेंट थॉमस स्कूल की इस हरकत को एक सबक के रूप में लेते हुए शिक्षा प्रणाली को भेदभाव से मुक्त करने को ठोस कदम उठाए जाने चाहिए। स्थानीय शिक्षा विभाग को ऐसे मामलों में एक सख्त नीति अपनानी चाहिए व दोषी संस्थानों के खिलाफ उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

फाइल फोटो सेंट थॉमस स्कूल।

शिक्षा का उद्देश्यः समानता व स्वतंत्रता को बढ़ावा देना

सेंट थॉमस स्कूल का यह कदम शिक्षा के असली उद्देश्य पर सवाल खड़ा करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं हैए बल्कि समानता और स्वतंत्रता को बढ़ावा देना है। धर्मए जातिए और सामाजिक पृष्ठभूमि के भेदभाव से परे रहकर शिक्षा को निष्पक्ष व सबके लिए समान होना चाहिए। यह घटना बताती है कि जब तक शिक्षा संस्थानों में निष्पक्षता और समानता को प्राथमिकता नहीं देंगेए तब तक शिक्षा प्रणाली में बदलाव की उम्मीद करना व्यर्थ है।

मऊ में संपूर्ण समाधान दिवस

वृद्धा पेंशन में लापरवाही पर एडीओ समाज कल्याण का वेतन रोका गया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मऊ तहसील सभागार के संपूर्ण समाधान दिवस में डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर कड़ी निगरानी रखी। जिसमे वृद्धा पेंशन की प्रगति संतोषजनक न पाए जाने पर एडीओ समाज कल्याण दिनेश कुमार सिंह का वेतन रोकने के निर्देश दिएए जिससे प्रशासन में जिम्मेदारी का एक स्पष्ट संदेश दिया गया। डीएम ने सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्वक और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करें व मौके पर जाकर शिकायतकर्ताओं का पक्ष सुनकर समस्याओं का समाधान करें। भूमि विवाद और अतिक्रमण से संबंधित शिकायतों पर विशेष ध्यान देते हुए राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि राजस्व निरीक्षकए लेखपाल और पुलिस कर्मियों के साथ मौके पर स्थलीय निरीक्षण कराएं। डीएम ने चिंता व्यक्त की कि कुछ मामलों में शिकायतकर्ता बार.बार आवेदन करने के बावजूद समाधान न मिलने की शिकायत करते हैंए जिसे उन्होंने गंभीरता से लिया और अधिकारियों को जन शिकायतों का निष्पक्षए पारदर्शी और समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। इस मौके पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एसडीएम मऊ सौरभ यादव, सीओ मऊ यामीन अहमद, प्रभागीय वन अधिकारी प्रत्युस कटिहार, व अन्य प्रमुख अधिकारी मौजूद रहे। समाधान दिवस ने यह स्पष्ट किया कि अब लापरवाही और भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगाए और अधिकारियों को जनहित में काम करने की सख्त चेतावनी दी गई।

संपूर्ण समाधान दिवस करते अधिकारीगण।

महाकुंभ के मद्देनजर डीएम ने होल्डिंग एरिया व बैरियर का किया निरीक्षण, सुरक्षा पर विशेष जोर

बैरियर का निरीक्षण करते डीएम।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। महाकुंभ की तैयारी में जिला प्रशासन ने व्यापक कदम उठाते हुए श्रद्धालुओं की सुविधा सुनिश्चित करने पर जोर दिया है। डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने औद्योगिक परिक्षेत्र में बनाए गए होल्डिंग एरिया व मुर्का बॉर्डर बैरियर का आकस्मिक निरीक्षण किया। अधिकारियों को निर्देश दिए कि होल्डिंग एरिया में पानीए शौचालयए प्रकाश व साफ.सफाई की व्यवस्था दुरुस्त हो। स्पष्ट चेतावनी दी कि व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मुर्का बॉर्डर बैरियर का निरीक्षण करते हुए डीएम ने एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी को पोर्टेबल बैरियर लगाने का निर्देश दिया। सुरक्षा कर्मियों को संदिग्ध वाहनों पर कड़ी नजर रखने व सतर्क रहने के आदेश दिए। आगे कहा कि महाकुंभ में भारी संख्या में श्रद्धालुओं की मौजूदगी को देखते हुए डायल 100 की गाड़ियां नियमित गश्त करेंगीए जिससे सुरक्षा और सुगम यातायात सुनिश्चित हो सके। निरीक्षण में अपर पुलिस अधीक्षकए अधिशासी अधिकारीए तहसीलदार व खंड विकास अधिकारी मऊ मौजूद रहे।

दंपति की दर्दनाक मौतः पत्नी ने लगाई फांसी, पति ने ट्रेन से कटकर दी जान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी व थाना भरतकूप में एक हृदयविदारक घटना ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया है। बताया गया कि लौडिहा खुर्द निवासी 22 वर्षीय जानकी पत्नी शिवलाल ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लीए जबकि कुछ ही घंटों बाद पति शिवलाल की लाश रेलवे ट्रैक पर मिलीए जो ट्रेन से कटकर जान दे चुका था। घटना दंपति के आपसी विवाद की ओर इशारा करती हैए हालांकि मौत के वास्तविक कारणों का पता पुलिस जांच व पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही चल सकेगा।

एएसपी चित्रकूट चक्रपाणि त्रिपाठी ने बताया कि दोनों घटनाओं की जानकारी मिलते ही संबंधित थाना क्षेत्रों की पुलिस मौके पर पहुंच गई। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया हैए व मामले की गहन जांच की जा रही है। आश्वासन दिया कि आवश्यक विधिक कार्रवाई की जाएगी। इस हृदयविदारक घटना से क्षेत्र में शोक की लहर है। इस त्रासदी ने समाज में रिश्तों में बढ़ते तनाव व मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं की ओर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। वहीं लोगों ने प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच व दोषियों की पहचान की मांग की है। घटना न केवल एक परिवार की व्यक्तिगत त्रासदी हैए बल्कि समाज के सामने बड़ी चुनौती हैए जो रिश्तों को मजबूत बनाने और तनाव को कम करने की दिशा में सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता को दर्शाती है।

चित्रकूट में गौ सेवा आयोग अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता का भव्य स्वागत, जैविक खेती के लिए करेंगे प्रोत्साहन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उत्तर प्रदेश गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष व कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता का चित्रकूट आगमन पर डाक बंगले में भव्य स्वागत किया गया। भाजपा नेताओं व जनपदवासियों ने माल्यार्पण व अंगवस्त्र भेंट कर अभिनंदन किया।

श्याम बिहारी गुप्ता ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश के चहुंमुखी विकास की सराहना की। कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था सुदृढ़ हुई है व आध्यात्मिक प्रचार.प्रसार ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर अलग पहचान दी है। आगे कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर गौमूत्र और गोबर से जीवा खाद का निर्माण किया जा रहा हैए जिससे जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा। लोढ़वारा गांव के पास जीवा खाद निर्माण की शुरुआत की और इसे पूरे जनपद में लागू करने की योजना की जानकारी दी। गुप्ता ने कहा कि यह पहल किसानों को जहरमुक्त खाद्य उत्पादन में सहायता करेगी। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों व स्थानीय निवासियों ने क्षेत्र की सड़कए बिजलीए जल निकासी और अन्ना गोवंश की समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा। गुप्ता ने इन समस्याओं पर प्रभावी कार्यवाही का आश्वासन दिया और कहा कि अन्ना गोवंश के लिए सरकार ठोस कदम उठा रही है। कार्यक्रम में भाजपा किसान मोर्चा मीडिया प्रभारी रामसागर चतुर्वेदी, सभासद शंकर यादव, वरिष्ठ पत्रकार रतन पटेल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

गाजा सीजफायर डील : कौन हैं तीन महिला बंधक जिन्हें सबसे पहले रिहा करेगा हमास

तेल अवीव। हमास ने रविवार को तीन महिला बंधकों के नाम सार्वजनिक कर दिए जिन्हें समझौते के तहत वो सबसे पहले रिहा करेगा। गाजा सीजफायर समझौते के पहले चरण के तहत फिलिस्तीनी ग्रुप 33 बंधकों को रिहा करेगा जिसके बदले में इजरायल सैंकड़ों फिलिस्तीनी कैदियों को मुक्त करेगा।

रिपोर्ट के मुताबिक हमास की सशस्त्र शाखा कस्साम ब्रिगेड के प्रवक्ता अबू ओबैदा ने कहा, "कैदी अदला-बदली समझौते के तहत हमने रविवार को रोमी गोनेन, (24), एमिली दमारी, (28), और डोरोन श्टनबर खैर, (31) को रिहा करने का फैसला किया है।"

टाइम ऑफ इजरायल के मुताबिक अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट में, गोनेन के भाई शाहफ ने लिखा है कि उनकी बहन लिस्ट में शामिल है और यह आधिकारिक है।

24 वर्षीय गोनेन को 7 अक्टूबर, 2023 को नोवा फेस्टिवल से बंधक बना लिया गया था। अपनी मां को फोन करके उसने बताया था कि हमास के हमले के दौरान उसे गोली लगी है। उस दिन उसके साथ मौजूद उसके तीन

दोस्तों की हत्या कर दी गई थी।

दमारी, जो कि ब्रिटेन-इजरायली दोहरी नागरिकता रखती है, और स्टीनब्रेचर को 7 अक्टूबर, 2023 को किबुत्ज केफर अजा में उनके घरों से बंधक बना लिया गया था।

दमारी को हमलावर ने गोली मारकर घायल कर दिया था। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक उसके कुत्ते की हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी।

दमारी और स्टीनब्रेचर - दोनों किबुत्ज में ही रहती थीं - जहां के 37 निवासियों में से 11 लोगों की हत्या कर दी गई और सात लोगों का अपहरण कर उन्हें गाजा ले जाया गया। इजरायल का मानना है कि गाजा में 98 बंधक हैं।

माना जाता है कि उनमें से लगभग आधे जीवित हैं। इनमें इजराइली और गैर-इजरायली दोनों शामिल हैं। कुल बंधकों में से 94 को 7 अक्टूबर, 2023 को इजरायल पर हमास के नेतृत्व वाले हमले में पकड़ा गया था और चार को 2014 से गाजा में रखा गया है।

हमास ने 7 अक्टूबर 2023 को इजरायल पर हमला किया, जिसमें करीब 1,200 लोग मारे गए और 251 लोगों को बंधक बनाकर वापस गाजा ले जाया गया। इसके बाद यहूदी राष्ट्र ने हमास के कब्जे वाले गाजा पट्टी पर हमले शुरू कर दिए।

इजरायल की सैन्य अभियान ने गाजा को बर्बाद करके रख दिया।

गाजा में हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार शनिवार तक लगभग 46,899 फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं, तथा कम से कम 110,725 घायल हुए हैं।

चीन ने कर दी भारत की खुलकर तारीफ, इधर ट्रंप ने जिनपिंग को फट से फोन लगा दिया

चीन

इसरो की ये सफलता तब सामने आई जब दुनिया के कई देश अंतरिक्ष की दौड़ में भारत के पीछे हैं। इस मिशन ने ये साबित कर दिया कि भारत न केवल एक उभरती हुई शक्ति बल्कि अंतरिक्ष में नेतृत्वकर्ता की भूमिका में है।

भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक बार फिर से अपनी चाह को राह में बदल दिया है। इस बार ऐसा कर दिखाया कि दुनिया स्तब्ध है और चीन जैसे देश भी भारत की तारीफ करने पर मजबूर हो गए हैं। चीन जो खुद अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक महाशक्ति है, उसने भी इसरो को उसकी इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बधाई दी है। भारत में चीनी दूतावास के प्रवक्ता यू जिंग ने कहा कि स्पेडेक्स मिशन के तरत उपग्रहों की सफल डॉकिंग के लिए भारत और इसरो को बधाई। इसरो की ये सफलता तब सामने आई जब दुनिया के कई देश अंतरिक्ष की दौड़ में भारत के पीछे हैं। इस मिशन ने ये

साबित कर दिया कि भारत न केवल एक उभरती हुई शक्ति बल्कि अंतरिक्ष में नेतृत्वकर्ता की भूमिका में है। यानी भारत अब कहीं न कहीं लीडर की भूमिका में सामने आ रहा। ये सफलता ट्रंप के शपथग्रहण से पहले एक बड़ा झटका सरीखा होगा। ये दिखाता है कि भारत अपनी नीतियों और योजनाओं को कितनी तेजी से लागू कर रहा है। वैसे ये पहली बार नहीं है जब इसरो ने दुनिया को चौंकाया हो। सितंबर 2024 में भारत के मंगलयान मिशन यानी मार्स ऑर्बिटर मिशन ने मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश किया था। इस उपलब्धि ने भारत को मंगल तक पहुंचने वाला पहला एशियाई देश बनाया था। इतना ही नहीं भारत ने ये उपलब्धि अपने पहले ही प्रयास में हासिल की थी। जो कि अपने आप में एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड है। चीन ने उस वक्त भी मंगलयान मिशन की सफलता पर भारत की तारीफ करते हुए कहा था कि ये केवल भारत या एशिया नहीं बल्कि पूरे मानवजाति के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। चीन ने 2020 में अपना पहला मंगल मिशन लॉन्च किया जो 2021 में मंगल की कक्षा में सफलता पूर्वक प्रवेश कर गया। लेकिन इसके एक दशक पहले चीन को असलता का सामना करना पड़ा था जब रूसी अंतरिक्षयान के साथ उसका ऑर्बिटर नाकाम हो गया था। इसरो की सफलता न केवल चीन को प्रेरणा दे रही बल्कि उसे ये भी सोचने पर मजबूर कर रही कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी में भी भारत उसका सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी बनकर सामने आ गया है।

वो चीन जो अक्सर भारत के खिलाफ आक्रमक रवैया अपनाता रहता है।

गैसोलीन टैंकर विस्फोट में मरने वालों की संख्या 86 पहुंची

नाइजीरिया:

अधिकारी ने कहा, कुछ लोग जलकर राख हो गए। उन्होंने संकेत दिया कि मृतकों की संख्या 86 से अधिक हो सकती है। उन्होंने कहा, फोरेंसिक जांच के बिना हमें मृतकों की सटीक संख्या ज्ञात नहीं हो पाएगी।

नाइजीरिया के उत्तर-मध्य हिस्से में एक गैसोलीन टैंकर में हुए विस्फोट के बाद इस घटना में मरने वालों की संख्या 86 पहुंच गई है। देश की आपातकालीन प्रतिक्रिया एजेंसी ने रविवार को यह जानकारी दी।

एजेंसी ने बताया कि यह विस्फोट शनिवार तड़के नाइजर प्रांत के सुलेजा क्षेत्र के पास उस समय हुआ जब कुछ लोग दुर्घटनाग्रस्त तेल के एक टैंकर से जेनरेटर का उपयोग कर गैसोलीन को दूसरे ट्रक में स्थानांतरित करने का प्रयास कर रहे थे।

ईंधन स्थानांतरण करते समय उससे विस्फोट हो गया, जिसके कारण गैसोलीन स्थानांतरित करने वाले लोगों तथा आसपास खड़े लोगों की मृत्यु हो गई। राष्ट्रीय आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी के हुसैनी ईसा ने बताया कि 55 अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनका सुलेजा क्षेत्र के तीन अस्पतालों में उपचार किया जा रहा है।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री ने आर्थिक वृद्धि और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मंत्रिमंडल में किए बदलाव

वेलिंगट। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने आर्थिक वृद्धि और स्वास्थ्य क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रविवार को अपने मंत्रिमंडल में कई बदलाव किए।

उन्होंने यह बदलाव प्रधानमंत्री के पदभार संभालने के एक साल बाद किए हैं। प्रधानमंत्री का कहना है कि नई टीम 2025 तक आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखेगी। इसके साथ ही, लोग बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और व्यवसायों के लिए अधिक अवसरों का लाभ उठा सकेंगे।

लक्सन ने कहा कि पिछले साल अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति में गिरावट और ब्याज दरों में कटौती जैसी सकारात्मक प्रगति हुई है। वित्त मंत्री निकोला विलिस को अब आर्थिक विकास मंत्री की अतिरिक्त भूमिका दी गई है। वह न्यूजीलैंड के व्यवसायों को बढ़ाने, निवेश आकर्षित करने और नई प्रतिभा को विकसित करने के लिए सरकार के एजेंडे का नेतृत्व करेंगे।

लक्सन ने कहा कि वित्त मंत्री निकोला विलिस की एक अतिरिक्त भूमिका आर्थिक विकास मंत्री बनना है, जिसे पहले आर्थिक विकास पोर्टफोलियो के रूप में जाना जाता था।

उन्होंने कहा कि विलिस "न्यूजीलैंड के व्यवसायों की क्षमता को बढ़ाने, प्रतिभा विकसित करने और निवेश आकर्षित करने के लिए सरकार के विकास एजेंडे का नेतृत्व करेंगे।" शिमोन ब्राउन स्वास्थ्य मंत्री बनेंगे और शेन रेती की जगह लेंगे। शेन रेती को अब विश्वविद्यालयों और विज्ञान क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई है, जो आर्थिक विकास योजना का हिस्सा है।

क्रिस बिशप को परिवहन मंत्री बनाया गया है और लुईस अपस्टन को पर्यटन और आतिथ्य मंत्री नियुक्त किया गया है। जूडिथ कोलिन्स को सार्वजनिक सेवा मंत्री का पद दिया गया, जबकि मार्क मिशेल को खेल,

मनोरंजन और जातीय समुदायों के विभागों का जिम्मा सौंपा गया है। साइमन वाट्स को ऊर्जा और स्थानीय सरकार विभाग सौंपा गया है। इसके अलावा, जेम्स मीगर को शिकार, मछली पकड़ने और युवा विभागों के मंत्री के रूप में पदोन्नत किया गया है, साथ ही उन्हें परिवहन विभाग का सहयोगी मंत्री भी बनाया गया है।

2024 में चीन के प्रांतीय कर्मचारियों के पारस्परिक सहायता वाले चिकित्सा बीमा व्यक्तिगत खातों की संख्या 37.1 करोड़ पहुंची

बीजिंग। चीनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा प्रशासन से 19 जनवरी को मिली खबर के अनुसार, वर्ष 2024 में प्रांत के भीतर कर्मचारी चिकित्सा बीमा के व्यक्तिगत खातों में पारस्परिक सहायता प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या 37.1 करोड़ तक पहुंच गई, जिसमें कुल सहायता राशि 51.154 अरब युआन है।

पारस्परिक सहायता क्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य से, समान समन्वित क्षेत्र (आमतौर पर समान प्रान्त के समान शहर) के भीतर पारस्परिक सहायता से 34.1 करोड़ लोग लाभान्वित हुए, जिसमें पारस्परिक सहायता राशि 45.102 अरब युआन थी;

एक ही प्रांत में विभिन्न समन्वित क्षेत्रों में पारस्परिक सहायता से 3.00062 करोड़ लोग लाभान्वित हुए हैं, और पारस्परिक सहायता राशि 6.052 अरब युआन थी।

पारस्परिक सहायता उद्देश्यों के संदर्भ में, 38.14 अरब युआन का

उपयोग निश्चित चिकित्सा संस्थानों में किए गए व्यक्तिगत चिकित्सा व्यय के भुगतान के लिए किया गया, 1.922 अरब युआन का उपयोग निश्चित खुदरा फार्मेसियों में किए गए व्यक्तिगत व्यय के भुगतान के लिए किया गया, और निवासियों के लिए बुनियादी चिकित्सा बीमा में भाग लेने के लिए व्यक्तिगत योगदान की राशि 10.116 अरब युआन थी।

दिसंबर 2024 तक, चीन के सभी प्रांतों ने कर्मचारी चिकित्सा बीमा पारस्परिक सहायता रिश्तेदारों के दायरे का विस्तार करके इसमें तत्काल रिश्तेदारों को भी शामिल कर लिया है।

चीन में अत्यंत गहरा तेल एवं गैस उत्पादन बढ़ा

बीजिंग। चीन में सबसे बड़े अत्यंत गहरे तेल एवं गैस उत्पादन क्षेत्र तारिम तेल क्षेत्र में वर्ष 2024 में 6,000 मीटर से नीचे तेल एवं गैस का उत्पादन दो करोड़ चार लाख 70 हजार टन तक पहुंचा, जो एक नया रिकॉर्ड है।

बताया जाता है कि तारिम तेल क्षेत्र चीन में सबसे बड़ा तेल और गैस बेसिन है, जहां अत्यंत गहरे तेल एवं गैस संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं। नव विकसित प्रमुख गहरे-जमीनी प्राकृतिक गैस उत्पादन क्षेत्र होने के नाते तारिम तेल क्षेत्र के पोचीतापेई गैस क्षेत्र में प्राकृतिक गैस का सालाना उत्पादन लगातार पांच साल से तेजी से बढ़ रहा है।

● चीन में सबसे बड़े अत्यंत गहरे तेल एवं गैस उत्पादन क्षेत्र तारिम तेल क्षेत्र में वर्ष 2024 में 6,000 मीटर से नीचे तेल एवं गैस का उत्पादन दो करोड़ चार लाख 70 हजार टन तक पहुंचा

अब तारिम तेल क्षेत्र में पांच गहरे और अति गहरे प्राकृतिक गैस उत्पादक क्षेत्रों का निर्माण किया गया है, जहां दैनिक प्राकृतिक गैस उत्पादन नौ करोड़ क्यूबिक मीटर से अधिक है। इन प्राकृतिक गैस का अधिकांश भाग जमीन के नीचे सात या आठ हजार मीटर गहरे स्तर से निकाला जाता है।

वर्ष 2024 में तारिम तेल क्षेत्र में 8,000 मीटर या उससे अधिक गहराई वाले 50 से अधिक कुओं की खुदाई की गई।

चीन का पहला 10 हजार मीटर की गहराई का खोज कुआं दुनिया का दूसरा सबसे गहरा और एशिया का सबसे गहरा कुआं बन गया है। इससे जाहिर है कि चीन ने गहरे तेल एवं गैस खनन में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

अमेरिका के इतिहास में हो रहा पहली बार, अपने शपथ में भारतीय बैंड बजवा रहे हैं ट्रंप

अमेरिका

सिंपल तरीके से परोसी गई चीज हर किसी को पसंद आती है। उन्होंने कहा कि हम कुछ तो स्पेशल करेंगे। ये महाराष्ट्रियन बीट पर होगा। ट्रंप प्रशासन की तरफ से इस शपथग्रहण में एक भारतीय अमेरिकी बैंड को बुलावा भेजा गया है। ये अमेरिका में मौजूद भारतीय अमेरिकी ढोल बैंड को बुलावा भेजा गया है। ये अमेरिका में मौजूद भारतीय अमेरिकी समुदाय के लिए बेहद ही गौरव का पल है। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जब शपथ लेंगे तो वो भारतीय ढोल ताशा भी सुनेंगे। ये पहली बार अमेरिका के इतिहास में हो रहा है जब किसी राष्ट्रपति के शपथग्रहण कार्यक्रम में ढोल ताशा बजाया जाएगा। शिवम ढोल ताशा बैंड के हरीश ने कहा कि अगर मौसम ने साथ दिया और अगर हम परफार्म कर पाए तो जो अच्छा है वो पड़ोसा जाएगा। सिंपल तरीके से परोसी गई चीज हर किसी को पसंद आती है। उन्होंने कहा कि हम कुछ तो स्पेशल करेंगे। ये महाराष्ट्रियन बीट पर होगा। ट्रंप प्रशासन की तरफ से इस शपथग्रहण में एक भारतीय अमेरिकी बैंड को बुलावा भेजा गया है। ये अमेरिका में मौजूद भारतीय अमेरिकी ढोल बैंड को बुलावा भेजा गया है। ये अमेरिका में मौजूद भारतीय अमेरिकी समुदाय के लिए बेहद ही गौरव का पल है। अमेरिका के इतिहास में आज तक जो हुआ नहीं है, वो होने जा रहा है। पूरी टीम पूरे जोर शोर से तैयारी में लगी है। पिछले एक महीने से तैयारी चल रही है, जब से हमें पता चला कि हमें यहां आना है।

अमेरिका में हुई TikTok की वापसी

अमेरिका

बाइटडांस को ऐप के अमेरिकी परिचालन से संबंध खत्म करने की भी मांग की गई। हालांकि, इसने एक मौजूदा राष्ट्रपति को व्यवहार्य बिक्री की स्थिति में 90-दिन का विस्तार देने की भी अनुमति दी।

टिकटॉक ने रविवार दोपहर तक संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने उपयोगकताओं के लिए सेवाएं बहाल कर दीं है। ये कदम तब उठाया गया जब नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने आश्वासन दिया कि 20 जनवरी को सत्ता संभालने के बाद वह ऐप पर संघीय प्रतिबंध को रोक देंगे।

शॉर्ट वीडियो सर्विस ऐप को "राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं" के कारण रविवार को कुछ समय के लिए बंद करना पड़ा। आदेश में की चीन स्थित मूल कंपनी, बाइटडांस को ऐप के अमेरिकी परिचालन से संबंध खत्म करने की भी मांग की गई। हालांकि, इसने एक मौजूदा राष्ट्रपति को व्यवहार्य बिक्री की स्थिति में 90-दिन का विस्तार देने की भी अनुमति दी। 20 जनवरी को अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने वाले डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि वह कंपनी को संघीय आदेश का पालन करने के लिए "सौदा करने" के लिए और समय देना चाहते हैं।

क्या इजरायल ने ट्रंप की वजह से स्वीकारी गाजा सीजफायर डील, इजरायली विदेश मंत्री ने बताया 'सच'

तेल अवीव। इजरायल के विदेश मंत्री गिदोन साह्रर ने रविवार को कहा कि इजरायल और हमास के बीच युद्ध विराम-बंधक समझौते में अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भागीदारी 'बहुत प्रभावशाली' थी। इसके साथ ही उन्होंने दावा किया कि ट्रंप ने इजरायल को ऐसा कुछ करने के लिए मजबूर नहीं किया जो वह नहीं करना चाहता था।

सीएनएन के मुताबिक साह्रर ने कहा कि पिछले हफ्तों के दौरान अमेरिका और राष्ट्रपति ट्रंप की समझौता वार्ता में मजबूत भागीदारी बहुत प्रभावशाली और मददगार रही।

डोनाल्ड ट्रंप 21 जनवरी को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे।

● इजरायल के विदेश मंत्री गिदोन साह्रर ने कहा कि इजरायल और हमास के बीच युद्ध विराम-बंधक समझौते में अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भागीदारी 'बहुत प्रभावशाली' थी

इजरायली विदेश मंत्री ने कहा कि ट्रंप ने इजरायल को ऐसा कुछ करने के लिए मजबूर नहीं किया जो वह नहीं करना चाहता था। उन्होंने कहा, ह्लहमने एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम किया जो हमारे लिए बहुत अहम था, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में राष्ट्रपति ट्रंप बहुत मददगार रहे।

साह्रर ने माना कि इजरायल ने हमास को हराने का अपना लक्ष्य हासिल नहीं किया है, उन्होंने कहा कि फिलिस्तीनी समूह 'अभी भी गाजा में सत्ता में है।'

इजरायली मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जिस युद्ध विराम पर सहमति बनी है, वह अस्थायी है। उन्होंने कहा, "हम पहले चरण के दौरान दो सप्ताह से थोड़ा अधिक समय के बाद दूसरे चरण पर बातचीत शुरू करेंगे", लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि "एक चरण से दूसरे चरण में जाना ऑटोमैटिक नहीं है।"

साह्रर ने कहा, "मैं इस तथ्य को छिपाना नहीं चाहता कि हम इस ढांचे (समझौते) में दर्दनाक कीमत चुका रहे हैं। हत्यारों सहित जेल से आतंकवादियों को रिहा करना बहुत दर्दनाक और कठिन है और इसमें जोखिम भी है। पिछले शुक्रवार को सरकार में हमारी बहुत तकलीफदेह और सच्ची चर्चा हुई... लेकिन मुझे लगता है कि हमने अपने भाइयों और बहनों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के नजरिए से सही निर्णय लिया, जो 15 महीने से अधिक समय से वहां थे।"

गाजा में लंबे समय से प्रतीक्षित युद्धविराम कुछ घंटों की देरी के बाद रविवार को लागू हो गया। समझौते के तहत रविवार

को हमास ने तीन महिला बंधकों के नामों की घोषणा कर दी जिन्हें सबसे पहले रिहा किया जाएगा।

पहले चरण के दौरान हमास कुल 33 इजरायली बंधकों को रिहा करेगा। मिस्र [युद्धविराम में एक मध्यस्थ] ने शुक्रवार को कहा कि युद्धविराम के पहले छह-सप्ताह के चरण में कुल 1,890 फि लिस्तीनियों को रिहा किया जाएगा।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा, प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI NO. UPHIN/2001/09025
प्रबन्धक
अनूप मिश्रा
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादो का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा